सत्यापन क्रमांक : RAJHIN/2015/60530

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ६ अंक : १२ १ दिसम्बर २०२३ जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० ₹ वार्षिक

ओ३म्

वैचारिक क्रान्ति के लिए अवश्य पढ़िए:
महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती विरचित

सत्यार्थप्रकाश

१- प्रथम समुल्लास में ईश्वर के ओंकाराऽऽदि नामों की व्याख्या।
२- द्वितीय समुल्लास में सन्तानों की शिक्षा।
३- तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचर्य, पठनपाठनव्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने पढ़ाने की रीति।
४- चतुर्थ समुल्लास में विवाह और गृहाश्रम का व्यवहार।
५- पञ्चम समुल्लास में वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम का विधि।
६- छठे समुल्लास में राजधर्म।
७- सप्तम समुल्लास में वेदेश्वर-विषय।
८- अष्टम समुल्लास में जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय।
९- नवम समुल्लास में विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या।
१०- दशवें समुल्लास में आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय।
११- एकादश समुल्लास में आर्य्यावर्त्तीय मत मतान्तर का खण्डन मण्डन विषय।
१२- द्वादश समुल्लास में चारवाक, बौद्ध और जैनमत का विषय।
१३- त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत का विषय।
१४-चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों के मत का विषय।

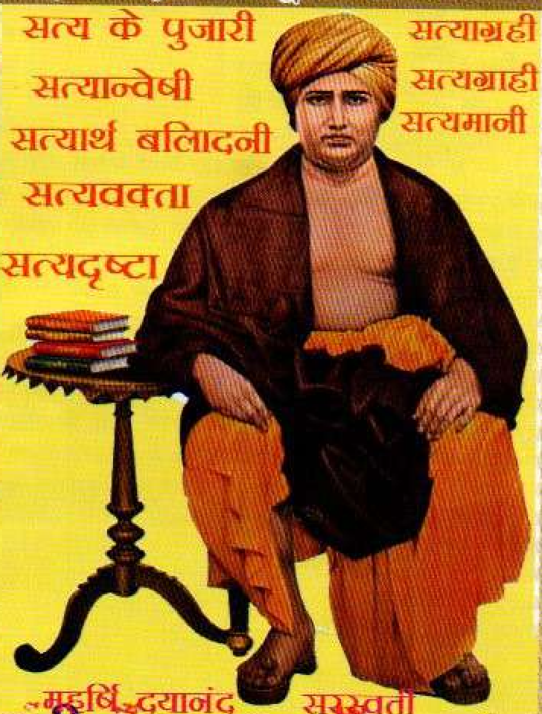

इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मुझ वा सब महाशयों का मुख्य कर्त्तव्य काम है।

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में
महर्षि दयानन्द सरस्वती

सशस्त्र सेना झंडा दिवस

7 दिसम्बर – 7 DECEMBER
ARMED FORCES FLAG DAY

1949 से शहीदों और देश की रक्षा के सीमाओं पर लड़ने वाले सैनिकों के सम्मान हेतु पूरे देश में हर साल 7 दिसम्बर को सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया जाता है। इस दिन धन-संग्रह सशस्त्र सेना के प्रतीक चिन्ह झंडे को बाँट कर किया जाता है। इस झंडे में तीन रंग (लाल, गहरा नीला और हल्का नीला) तीनों सेनाओं को प्रदर्शित करते है। सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर हुए धन संग्रह के तीन मुख्य उद्देश्य है- १. युद्ध के समय हुई जनहानि मे सहयोग, २. सेना में कार्यरत कर्मियों और उनके परिवार के कल्याण और सहयोग हेतु, ३. सेवानिवृत्त कर्मियों और उनके परिवार के कल्याण हेतु। दिव्यांग पूर्व सैनिकों, युद्ध विधवाओं, शहीदों के बच्चो और अन्य ऐसे लाभार्थियो को मदद करने के लिए सशस्त्र बल झंडा दिवस कोष की स्थापना 1993 मे की गई थी जिन्हे हमारी देखभाल और सहायता की आवश्यकता है। 'सशस्त्र बल झंडा दिवस कोष' मे आप अपना योगदान ***कभी भी*** क्रेडिट / डेबिट कार्ड या नेट बैंकिंग द्वारा करने हेतु ksb.gov in/armed-forces-flag-day-fund.htm पर लॉग इन करें।

वे जिनके लिए आप श्रद्धा और अभिमान से योगदान कर सकते हैं

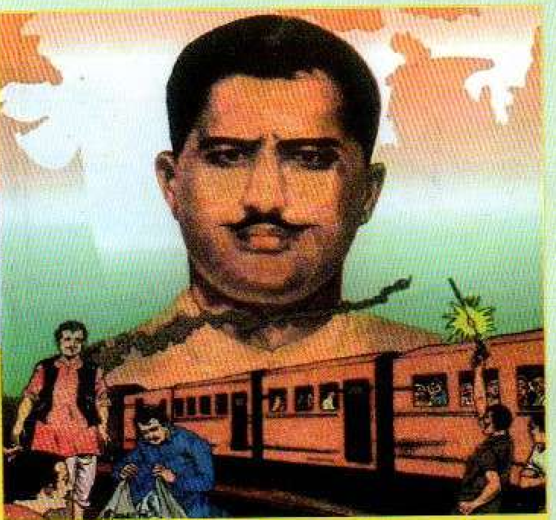

"श्री मुंशी इंद्रजीतजी ने मुझे संध्या करने का उपदेश दिया.....सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नया पृष्ठ खोल दिया। मैनें उसमें लिखित ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन आरंभ कर दिया....मैं थोड़े दिनों में ही कट्टर आर्यसमाजी हो गया... मेरे पिताजी जिद्द पकड़ गए....'या तो आर्यसमाज से त्यागपत्र दे या घर छोड़ दे।' पायजामे के नीचे लंगोट बंधा था। पिताजी ने हाथ से धोती छीन ली और कहा, 'घर से निकल।'...मैं पिताजी के पैर छूकर गृह त्याग कर चला गया....वास्तव में स्वामी सोमदेव जी मेरे गुरुदेव और पथप्रदर्शक थे।..... **बिस्मिल की आत्मकथा से।"** बलिदान दिवस १९दिसम्बर।

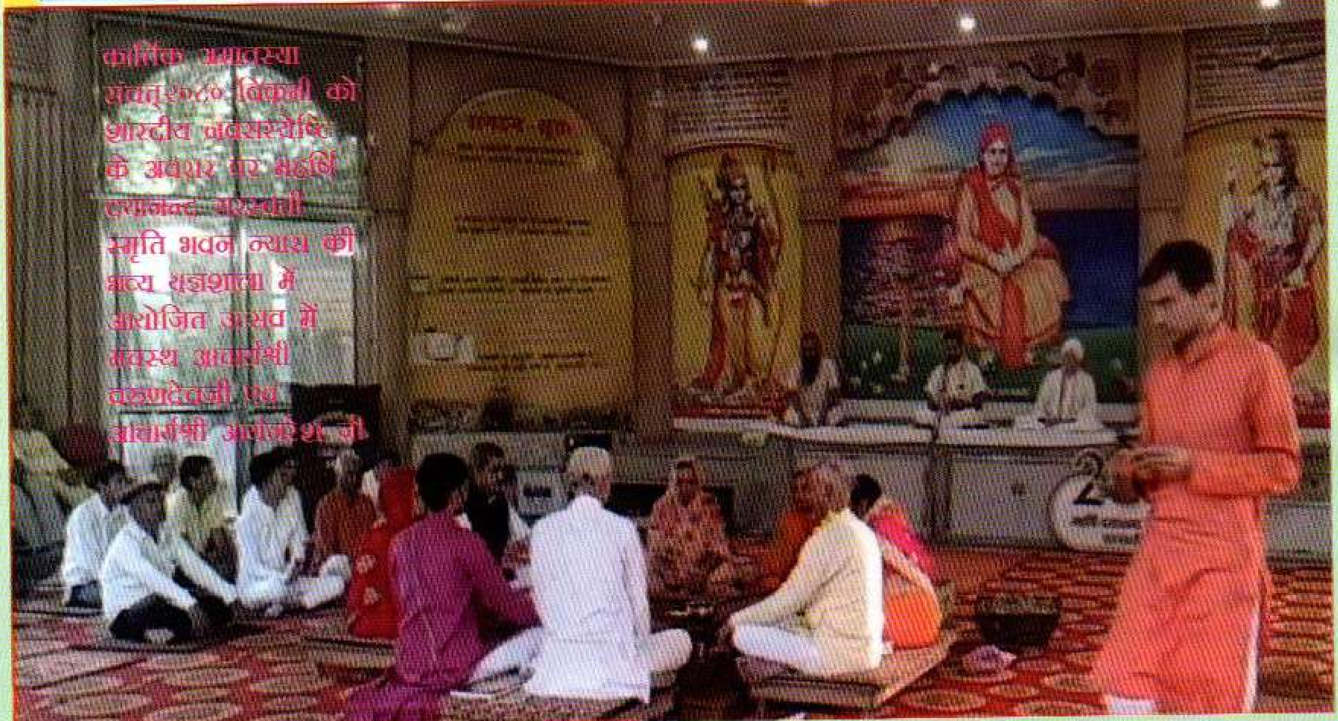

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

वर्ष : ६ अंक : १२

दयानन्दाब्द : -१९९

विक्रमसंवत् : माह-मार्गशीर्ष २०८०

कलि संवत् ५१२४

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,१२४

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक : 0291-2516655

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये (१५वर्ष)

अनुक्रमणिका

क्या	कहाँ
१. सम्पादकीय	४
२. वेद-वचन	८
३. कृपण से इन्द्र मैत्री नहीं...	१०
४. धर्म सुधा सार....	११
५. महर्षि जीवन...	२०
६. शारदीय नवसस्येष्टि........	३२
७. स्वामी श्रद्धानन्दजी का अलीगढ़ में.....	३४

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

सम्पादकीय

चोर–चोर चिल्ला रहे सीनाजोर

श्रद्धेय डॉ0 धर्मवीर जी मुहम्मद साहब को मानवीय स्वभाव का सर्वोत्तम विशेषज्ञ मानते थे, विशेषकर मानवीय कमजोरियों को भुनाने का। हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों में अपने लिए अहितकर मार्ग को अपनाना अधिक अच्छी तरह सिखाया जाता है, ताकि सिखाने वाले के हित सदा सुरक्षित रहे। धरा के श्रेष्ठ मूल्य, श्रेष्ठ लोग और श्रेष्ठ संसाधन उन्हें कभी प्रिय नहीं लगे। असहिष्णुता और कूरता कूट कूटकर भर दी गई। न्याय, सौजन्य और सहअस्तित्व पर इनका विश्वास है ही नहीं। झगड़े का कोई भी कारण बना लेते हैं। न्याय यदि इनके विरुद्ध जाता है तो इसे अन्याय का नाम देते हैं। एक तथ्य की ओर ध्यान दिलाता हूँ। ईसा की छठवीं शताब्दी तक इस्लाम का नाम भी नहीं था। ईसापूर्व छठवीं शताब्दी में भी यहूदी मत धरा पर था और अरब की धरा पर यहूदी मत ही था। लगभग साढ़े पॉच हजार वर्ष का इतिहास महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारवें समुल्लास के अंत में वर्ष मास और दिन सहित दिया है। किन्तु इस्लाम की दावत जहॉ एक बार भी स्वीकार हो गई, मूसलमान उससे पूर्व के इतिहास को कभी भी सौजन्य से स्वीकार नहीं करते। अयोध्या के राममन्दिर का इतिहास साक्षी है। यदि इस्लाम सच्चाई को सहजता से स्वीकार करे तो ज्ञानवापी के लिए न्यायालय क्यों जाना पड़े? योरोशलम के लिए भी इस्लामी राष्ट्रों के झगड़ों का कारण भी इस असहिष्णुता से अलग नहीं है। इस्राइल को नष्ट करने के संकल्प भी इस असहिष्णुता से अलग नहीं है। इतिहास और वर्तमान दोनों ही इसके साक्षी है। कश्मीर में हमने देखा है कि आतंकी नागरिकों के घरों में, उनके बीच शरण लेते थे। जब भारतीय सुरक्षाबल जाते तो आतंकियों को मार्ग देने के लिए कश्मीर के आम मुसलमान भारतीय बलों का मार्ग रोक लेते थे। पत्थरवर्षा करते थे। उनके हिमायती कहते थे कि वे आतंकियों की बंदूकों के आगे विवश मासूम पीड़ित हैं। जो भारतीय बंदूकों के सामने खुलकर पत्थरमात्र लेकर आ जाते थे, वे मौहल्ले में प्रवेश करते ही आतंकियों पर छत से पत्थरवर्षा कर भगा क्यों नहीं सकते थे?

अब अरब की ओर चलते हैं। गतांक में इस्राइल पर इस्लामिक आतंकवादी संगठनों के बर्बर हमले की चर्चा की थी। मुझे तो यह जानकर आश्चर्य नहीं होता है कि फिलीस्तीन के लोगों ने आतंकवादी हमास को अपना शासक चुना। गाजा में अस्पतालों के नाम बता रहे हैं कि वे किस देश की मदद से बने? फिलीस्तीन विश्व में दया और दान का पात्र बन चुका है और विश्व उन्हें बेहिसाब दयावश बेहिसाब दान देता रहा है। हमास के शासक बन जाने पर ईरान जैसे कुछ मुस्लिम देशों ने उसे हथियारों का विशाल जखीरा भी दिया। हमास ने इस बेहिसाब दान का उपयोग अपनी सैन्य क्षमता के विस्तार में किया। हमास, हिज्बुल्लाह और हैती के विरुद्ध यहूदी राष्ट्र इजरायल का युद्ध तीसरे माह में प्रवेश कर चुका है।

इस्लामी आतंकवादियों की सोच कितनी वित है और उनके लिए असैन्य नागरिकों की जान को दॉव पर लगाना कितना सहज है–यह इस युद्ध में पता चल रहा है।

मानव अधिकार वादी लोग अपराधियों और आतंकवादियों के मानव अधिकार की ही रक्षा

करने में लगे रहते हैं। किंतु जो अपराधी और आतंकवादी मानव की श्रेणी में ही नहीं आते, उनके मानव अधिकारों की चिंता कैसे की जा सकती है? वह भी तब जब उनकी ७ अक्टूबर की बर्बरता और अमानवीयता के वीडियो आते चले जा रहे हैं!

हमास ने फिलीस्तीन को मिल रहे सारे धन को इसराइल के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के संसाधन बनाने में लगाया जमीन के २00 फीट नीचे तक सुरंगें बनाई गईं। हथियारों का अत्यधिक विशाल जखीरा जमा किया गया और एक सोची समझी रणनीति के तहत जिस असैन्य जनता ने हमास को अपना शासक चुना, इस असैन्य जनता की जान की परवाह किए बिना बस्तियों के बीच घरों में, स्कूलों में, मस्जिदों में, अस्पतालों में इन सुरंगों और अपने मुख्यालय के मार्ग और मुख्यालय बनाए! हथियारों के लॉन्चिंग पैड मस्जिदों, स्कूलों और अस्पतालों में बने। यहाँ तक की शरणार्थी शिविरों के मध्य में भी हथियार रखकर वहाँ से इसराइल पर वार करने लगे, तो सभी राष्ट्र मिलकर बताएँ कि इसराइल अपनी रक्षा के लिए क्या इन पर हमला नहीं करेगा? और जब ये लोग निर्दोष नागरिकों के बीच बैठे हमले कर रहे हैं तो क्या उन पर गिरने वाला इस्राइली हथियार निर्दोष नागरिकों की पहचान करके अलग करेगा? जिन तथाकथित निर्दोष नागरिकों ने आतंकवादियों को अपना शासन चुना और उनकी रक्षा के लिए अब तक भी इसराइली सैनिकों के सामने पत्थर लेकर आ जाते हैं, उन्हें जीने का अधिकार और मानव अधिकार कैसे मिल सकते हैं? हथियार इस्राइली सैनिको के हाथों में भी है और आतंकियों के पास भी। उनके पत्थर आतंकियों पर क्यों नहीं चलते?

अब थोड़ी शान्ति की बात करते हैं, जिसकी ताली एक हाथ से नहीं ही बजती! सभी इस्लामी आतंककारी संगठन और ईरान क्या इसराइल के अस्तित्व को मिटाने के संकल्प से जरा भी दूर होकर सह अस्तित्व की बात कर सकते हैं? यदि नहीं तो इसराइल पर दबाव कैसे डाला जा सकता है? जबकि कोई भी देश यह गारंटी देने को तैयार नहीं है कि इसराइल रुक जाए तो आने वाले वर्षों में इसराइल पर यह आतंकी संगठन हमला नहीं करेंगे! कोई भी देश यह बताये कि हमास, हैती, हिजबुल्लाह जैसे आतंकवादी संगठनों ने हथियार किसके लिए एकत्रित किए हैं? क्या इसराइल से युद्ध विराम की मांग करने वाले राष्ट्र इन आतंकवादी संगठनों से हथियार नीचे डलवा सकते हैं?

हमास, हिज़्बुल्लाह, हूती निरंतर हमलावर हैं। लेकिन जिस देश मे उनके ठिकाने हैं, वे देश पल्ला झाड़ रहे हैं। लेबनान की धरती से हमला कर रहे आतंकी संगठन हिजबुल्लाह पर हमला करते एक लेबनानी सैनिक की मृत्यु पर इस्राइल को माफी मांगनी पड़ी। क्या इस्राइल लेबनान से हिजबुल्लाह आतंकियों को इस्राइल को सौपने की मांग नहीं कर सकता? न्याय क्या कहता है?आतंकियों को अपनी जमीन का उपयोग करने देने वाले ये राष्ट्र है या प्रतिराष्ट्र? ये इज़राईल को भी अपने सैन्य अड्डे बनाने की छूट क्यों नहीं देते? इसका उत्तर हाथी के खाने और दिखाने वाले दाँतों को आपके सामने रख रहा है।

अब विश्व परिदृश्य! अमेरिका ने बिना प्रमाण के इराक पर हमला कर सद्दाम हुसैन को अपदस्थ किया, हत्या की और इराक में आज भी अपने सैन्य अड्डे जमा हुए हैं। पूर्ण दादागिरी! रूस द्वारा क्यूबा को सैन्य मदद दिए जाने से अमेरिका ने घबराकर रूस से संधि की थी, क्योंकि

वह अपनी छाती पर साम्यवादी देशरूपी सशक्त नासूर नहीं चाहता था। दूरदर्शी राजनीतिक चिंतन से दूर एक भांड यूक्रेन में शासक बना और रूस की कृपा को भूलकर रूस का प्रतिद्वंदी नाटो सदस्य बनने का स्वप्न पाल मूर्ख दुर्योधन की भांति शकुनी बाइडन के पंजे में फॅसकर अपनी धरा को नर्क बना रहा है और अमेरिका नाटो राष्ट्रों के साथ मिलकर आग में घी डाल रहा है! मूर्ख भांड अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना हटाकर उसे आतंकी तातीबानों को सुपुर्द करने वाले बाइडन के कथन को भूल गया कि अमेरिकी सैनिकों की जान अन्य देशों के हितों के लिए नहीं है।

इजरायल आर्थिक हितों के कारण अमेरिका के लिए उसकी नाक का बाल भी है और मुस्लिम राष्ट्रों के लिए उनकी असहिष्णुता के कारण नासूर भी। इस्लामी असहिष्णुता का लाभ उठाकर ईरान ने अमेरिका को त्रस्त करने के लिए इसराइल के विरुद्ध पड़ौस के देशों में आतंकवादी संगठननों को हथियारों का बहुत बड़ा जखीरा दे दिया। कहने को ये आतंकवादी एक इस्लाम विरोधी राष्ट्र को नष्ट करने में लगे हैं। किंतु इससे अमेरिका की दुखती रग में पीड़ा बढ़ती है। इस्राइल के दुश्मन राष्ट्रों और आतंकवादी संगठनों की सामर्थ्य को देखते हुए अमेरिका ने यूक्रेन को अकेला छोड़ दिया है।

इधर ताइवान में चीन के विस्तारवादी रवैये के विरुद्ध ताइवान की रक्षा में अमेरिका खुलकर सामने आ गया है। इससे विस्तारवादी प्रतिराष्ट्र चीन भी अमेरिका से रुष्ट है।

रूस, चीन और अरब देशों की तिकड़ी अमेरिका के लिए भयंकर चुनौती बनाने जा रही है। इस्लामिक राष्ट्रों को दोनों हाथों में लड्डू मिले हुए हैं। यदि इस्राइल का नाश होता है तो उनकी असहिष्णु सोच को तृप्ति मिलेगी और अमेरिकी चौधराहट से मुक्ति भी।

इस विकट स्थिति में अपने प्रभुत्व को कायम रखने के लिए दोनों पक्ष हताशा और क्रोध की स्थिति में परमाणु हथियारों का विकल्प अरब प्रायद्वीप में तो चुन ही सकते हैं क्योंकि दोनों ही पक्षों को प्रत्यक्षतः वहाँ अपने विपक्षियों से कोई लगाव नहीं है।

अर्थात् दुनिया परमाणु युद्ध के मुहाने पर है।

चुनाव में लालच व जातिगत जनगणना

पहली बातः पाँच राज्यों में हुए चुनाव में जन धन की बंदर बॉट की जोरदार घोषणाएँ हुईं। चुनाव आयोग और सर्वोच्च न्यायालय दोनों ने हाथ खड़े कर दिए कि वे इन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकते। ऐसा लगता है कि दोनों ही संस्थएँ इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि केन्द्र या कोई भी राज्य लाभ का बजट पेश नहीं कर रहा है। सरकार अपना राजस्व सरकारी संसाधनों को बेचकर या जनता को निचोड़कर पैदा करती हैं। उस राजस्व में से राजनीतिज्ञ और अफसर स्वयं भी लूटते हैं और इस लूट के लिए सत्ता में आने या बने रहने के लिए अपनों में भी लुटाते हैं।

आश्चर्य यह है कि उम्मीदवार व्यक्तिगत धन खर्च करके वोट खरीदे तो चुनाव आयोग और कानून दोनों ही संस्थएं इसे अपराध मानतीं हैं और उम्मीदवार सरकारी धन

को खर्च करने का वादा करके वोट खरीदे तो ना चुनाव आयोग हस्तक्षेप कर सकता है और ना ही सर्वोच्च न्यायालय!

सरकारी धन का उपभोग और उपयोग करने वाले प्रत्येक कर्मी को वित्तीय औचित्य के मानक (canons of financial propriety)मुख्यतः इस प्रकार इस प्रकार बताए जाते हैं:– १. व्यय प्रथम दृष्टया अवसर की मांग से अधिक नहीं होना चाहिए, और यह कि **प्रत्येक सरकारी सेवक को सार्वजनिक धन से होने वाले व्यय के संबंध में उतनी ही सतर्कता बरतनी चाहिए, जितनी सामान्य विवेक वाला व्यक्ति अपने स्वयं के धन के व्यय के संबंध में बरतता है।** २. किसी भी प्राधिकरण को व्यय स्वीकृत करने की अपनी शक्तियों का प्रयोग **ऐसे आदेश** पारित करने के लिए नहीं करना चाहिए जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसके स्वयं के लाभ के लिए होगा।३. सार्वजनिक धन का उपयोग किसी विशेष व्यक्ति या समुदाय के वर्ग के लाभ के लिए नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि:– (अ) शामिल राशि या व्यय नगण्य है या (आ) राशि के लिए दावा कानून की अदालत में लागू किया जा सकता है या(इ) व्यय एक मान्यता प्राप्त नीति या प्रथा के अनुसरण में है।

जन धन को वोट के लिए लूटने वाले लोग क्या राज्य और राष्ट्र के बजट को लाभ का बजट बना सकते हैं? यदि नहीं तो उनको क्या हक है सरकारी धन का दुरुपयोग (वस्तुतः लूट) अपनी पार्टी को जीतने के लिए करने का?

दूसरी बातः चुनावी मुद्दों में हिंदुओं की जातिगत जनगणना ही क्यों?

मुसलमानों में शिया सुन्नी और जो अठहत्तर फिरके इस्लाम में हैं उनकी भी गणना होनी चाहिए और ईसाइयों में कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और अन्य भी जितने फिरके हैं उनकी जनगणना उसी हिसाब से होना चाहिए।

विशेष निवेदन यह है कि इस बार जनगणना में यह भी खुलासा होने चाहिए कि कितने मुस्लिम और ईसाई भारतीय मूल के हैं और कितने विदेशी मूल के? और जो ईसाई या मुस्लिम भारतीय मूल के हैं, उनके पुरखों का इस्लाम या ईसाइयत अपने का कारण क्या था और इस्लाम अपनाने के पूर्व वे किस जाति के थे। यह भी सामने आना चाहिए कि शरीर भारतीय मूल का होने पर भी यूरोपीय या अरब उपनामों की सच्चाई क्या है? वंश परिवर्तन कैसे हुआ? साथ ही यह भी गणना होनी चाहिए कि इस्लाम या ईसाईयत अपनाने से सभी दुःख और अभाव दूर होने के छल के परिणामस्वरूप धर्मान्तरित मुस्लिमों और ईसाईयों में से कितनों के दुःख दर्द दूर हुए। यदि जनगणना में यह सामने आता है कि धर्मान्तरित लोगों के अभाव और दुःख धर्मान्तरण के कारण दूर हो गए हैं तो इनकी आरक्षण की मांग कैसे जायज है? जनगणना में ये मानक सम्मिलित करने की पूर्ण सद्भावनायुक्त यह प्रार्थना तो मैं कर ही सकता हूँ। आपत्ति मात्र दुर्भावनाग्रस्त लोग ही करेंगे।

आर्यजनों! परिवेश पुकार रहा है प्राथमिकताएँ बदलकर पुरुषार्थ के लिए!–कमल।

वेद-वचन

विद्वानों का कर्तव्य

विद्वेषां सीनुहि वर्धयेळां मदेम शतहिमाः सुवीराः।। ऋग्वेद-६।१०।७।।

पदार्थः- हे अग्नि के समान परोपकार साधक विद्वन् ! आप **(द्वेषांसि)** द्वेष से युक्त कर्मों का त्याग करिए, कराइए और **(इळाम्)** वाणी वा अन्न को **(वि)** विशेष करके **(इनुहि)** व्याप्त होओ और हम लोग **(शतहिमाः)** सौ वर्षपयन्त **(सुवीराः)** अच्छे वीर पुरुषों से युक्त होकर **(मदेम)** आनन्द करें।

भावार्थः- विद्वानों को चाहिए कि वे कर्म करें और करावें, जिससे मनुष्यों के दोषों की निवृत्ति और बुद्धि, बल तथा अवस्था की वृद्धि होवे ।

प्रातःवेला में भक्त की प्रार्थना

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो, भगेमां विधयमुदवा ददन्नः।

भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।-यजुर्वेद ३४।३६।।

पदार्थः- हे **(भग)** ऐश्वर्ययुक्त ! **(प्रणेतः)** पुरुषार्थ के प्रेरक ईश्वर वा हे **(भग)** ऐश्वर्य के दाता ! **(सत्यराधः)** विद्यमान पदार्थों में उत्तम धनवाले **(भग)** सेवन-योग्य विद्वन् आप **(नः)** हमारी **(इमाम्)** इस वर्त्तमान **(धियम्)** बुद्धि को **(ददत्)** देते हुए **(उत् अव)** उत्कृष्टता से रक्षा कीजिए। हे **(भग)** विद्यारूप ऐश्वर्य के दाता ईश्वर वा विद्वन् ! आप **(गोभिः)** गौ आदि पशुओं, **(अश्वैः)** घोड़े आदि सवारियों और **(नृभिः)** नायक, कुलनिर्वाहक मनुष्यों के साथ **(नः)** हमको **(प्र, जनय)** प्रकट कीजिए। हे **(भग)** सेवा करते हुए विद्वन् ! जिससे हम लोग **(निवृन्तः)** प्रशस्त मनुष्यों वाले **(प्र स्याम)** अच्छे प्रकार हों, वैसा कीजिए।

भावार्थः- मनुष्यों को चाहिए कि जब-जब ईश्वर की प्रार्थना तथा विद्वानों का सङ्ग करें तब तब बुद्धि ही की प्रार्थना वा श्रेष्ठ पुरुषों की चाहना किया करें।

गायत्री

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ।। सामवेद-१४६२।।

पदार्थः-हम उपासक लोग उस **(सवितुः)** सर्वोत्पादक, सर्वपिता **(देवस्य)** प्रकाशमान्, ज्योतिःस्वरूप परमेश्वर के **(तत्)** उस अनिर्वचनीय **(वरेण्यम्)** वरणीय, भजनीय **(भर्गः)** तेज का ज्ञानमय तेज **(धीमहि)** ध्यान करते हैं **(यः)** जो प्रेरक परमात्मा परमेश्वर **(नः)** हमारी **(धियः)** बुद्धियों **(मन,बुद्धि,चित्तव अहंकार चारों)** को **(प्रचोदयात्)** अत्यन्त प्ररित करे । जिससे हमारा मन उसका मनन करे, बुद्धि उसका विवेचन करे, चित्त उसका विवेचन करे, अहंकारउसका ममत्व करे- उसे अपनावे

भावार्थः- जो सर्वजगदुत्पादक सर्वपिता सवितादेव, ज्योतिःस्वरूप पूज्य परमात्मा हमारी धर्मादि विषयक बुद्धियों को भले प्रकार प्रेरित करे उस जगरीश्वर के भजनीय और भगः=अविद्या आदि दुःखदायक विघ्नों को भून डालने वाले ज्ञानस्वरूप का हम ध्यान करते हैं ।

वेद-विद्या से मोक्ष

सरस्वती देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।

सरस्वती सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ।। अथर्ववेद-१८।१।४१।।

पदार्थः-(सरस्वतीम्) विज्ञानवती वेद-विद्या को **(सरस्वतीम्)** उसी सरस्वती को **(देवयन्तः)** दिव्य गुणों को चाहने वाले पुरुष **(तायमाने)** विस्तृत होते हुए **(अध्वरे)** हिंसारहित व्यवहार में **(हवन्ते)** बुलाते हैं । **(सरस्वतीम्)** सरस्वती को **(सुकृत)** शुभ कर्म करने वाले सुकृती लोग **(हवन्ते)** बुलाते हैं, **(सरस्वती)** सरस्वती **(दाशुषे)** अपने भक्त को **(वार्यम्)** श्रेष्ठ पदार्थ **(दात्)** देती है ।

भावार्थः- विज्ञानी लोग परिश्रम के साथ आदरपूर्वक वेद-विद्या का अभ्यास करके पुण्य कर्म करते और मोक्ष आदि इष्ट पदार्थ पाते हैं । वेद विद्या दिव्य गुण धारण करती है, व्यवहार को हिंसारहित बनाती है, शुभ कर्म हेतु प्रेरित करती है और अपने उपासक को श्रेष्ठ पदार्थ देती है।

८०. कृपण से इन्द्र मैत्री नहीं करता

-डॉ. रामनाथ विद्यालंकार

न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रो, असुन्वता सुतपाः सं गृणीते।

आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्नं, वि सुष्वये पक्तये केवलोऽभूत् ।।-ऋग् ४.२५.७ ।।

ऋषिः **वामदेवः** । देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्** ।

(सुतपाः) यज्ञ-भावना से अर्जित धन का रक्षक **(इन्द्रः)** परमेश्वर **(असुन्वता)** यज्ञ-भावना न रखने वाले **(पणिना)** कृपण **(रेवता)** धनी के साथ **(सख्य)** मैत्री को **(न संगृणीते)** नहीं संस्तुत करता । **(अस्य)** इस [कृपण] के **(वेदः)** धन को **(आ खिदति)** छीन लेता है [इसे] **(नग्न)** नंगा [करके] **(हन्ति)** नष्ट करता है । **(केवलः)** केवल **(सुष्वये)** यज्ञार्थ धन कमाने वाले के लिए [और] **(पक्तये)** यज्ञार्थ भोजन पकानेवाले के लिए [ही] **(वि भूत्)** विशेष रूप से स्थित होता है ।

संसार में धनी बहुत गौरवास्पद समझा जाता है । वेद में भी धन को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। तो भी धन अपने-आप में उद्देश्य नहीं है, अपितु धर्ममय सुखी जीवन का साधन है । परमेश्वर उसी धनी की रक्षा करता है, जो यज्ञभावना से अर्जित किया जाता है । यज्ञभावना क्या है ? दरिद्र को धन दान कर फिर स्वयं उपयोग में लाना और भूखे को भोजन खिलाकर फिर स्वयं भोग करना यही यज्ञ भावना है । भगवद्गीता का यह वेचन वेदमूलक ही है कि ''जो यज्ञशिष्ट-भोजी होते हैं, वे सब पापों से मुक्त हो जाते हैं, किन्तु जो केवल अपने लिए पकाते है, वे मानों पाप को ही खाते हैं''। जो हृदय में यज्ञभावना नहीं रखता है, जो अपने लिए ही कमाता है और स्वयं ही भोग करता है, भूखों के सामने बैठकर अपना पेट भरता है, ऐसे कृपण धनी मनुष्य के साथ इन्द्र मित्रता नहीं करता और यदि कोई दूसरा व्यक्ति उसके साथ मित्रता करे तो उसका भी समर्थन नहीं करता । ऐसे हृदयहीन लोगों का यही इलाज है कि वे मित्रहीन होकर रहें । जैसे वे दूसरे के दुःख-दर्द की ओर ध्यान नहीं देते, वैसे ही संकटकाल में उनका कोई सहायक न हो ।

इन्द्र का प्रकोप बड़ा भयंकर है । जब वह अ-यज्ञशिष्टाशी कृपण धनी व्यक्ति पर कुपित होता है, तब उसका धन उससे छीन लेता है, उसे नग्न करके नष्ट-भ्रष्ट कर देता है । भूत और वर्तमान पर दृष्टिपात करके देखो, ऐसे सैकड़ों उदाहरण दृष्टिगोचर होंगे । अ-यज्ञशिष्टाशी लोगों के ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं वाले बड़े-बड़े राज-प्रसाद धूलिसात् हो गए, धन-वैभव से भरे उनके जगमगाते खजाने लुट गए, उनके शस्त्रास्त्र उन्हीं पर चलाए गए, उनके रथो पर दूसरे लोगों ने सवारी की,उनके वैभवपूर्ण साधन अन्यों के ही काम आये । इन्द्र प्रभु तो केवल 'सुष्वि' और 'पंक्ति' जनों का मित्र बनता है । जो यज्ञार्थ धन का उपार्जन करते हैं, यज्ञार्थ भोजन पकाते हैं, और यज्ञार्थ अर्पित कर स्वयं यज्ञशेष का ही भोग करते हैं, ऐसे धनी जन ही इन्द्र के प्रेम-भाजन बनते हैं । अतः हे मनुष्य! तू धन-वैभव का स्वामी तो बन, किन्तु 'पणि' मत बन ।

-वेदमञ्जरी से

ओ३म

धर्म सुधा सार

सातवींकथाः –अपनी उन्नति के साधन

(श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय)

(मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त स्वनामधन्य विद्वान् श्री पंडित गंगाप्रसादजी उपाध्याय वैदिक दर्शन और आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर है। आपने **'धर्म–सुधार–सार'** नाम से दस कथाएँ संग्रहित करके कला प्रेस प्रयाग से वर्ष १९५४ में प्रकाशित करवायी थी। ये कथाएँ बहुत ही सारगर्भित और जटिल दार्शनिक सिद्धांतों को बहुत ही सुगम और सरस भाषा में हृदयंगम करवाने वाली है। –स0)

सातवीं कथा बड़े महत्व की थीं। आज स्वामी जी ने व्यक्तिगत उन्नति के साधन बताने को कहा था। सभी भक्त अपने जीवन को पवित्र बनाना चाहते थे, अत वे आज उपदेश के सुनने के लिए और दिन से अधिक उत्सुक थे।

भजन

तुम मेरी राखो लाज हरी
तुम जानत सब अन्तर्यामी, करनी कछु ना करी।।
अवगुन मोसे बिसरत नाहिं, पलछिन घरी घरी।।
सब प्रपंच की पोट बाँधि कै, अपने सीस धरी।।
दारा सुत धन मोह लिये हौं, सुध–बुध सब बिसरी।।
सूर पतित को बेगि उबारो, अब मोरि नाव भरी।।

स्वामीजीः– प्रिय धर्मानुरागियों! कुछ दिनों से हमारा समय धार्मिक सत्संग में बीत रहा है। इसको अपना अहोभाग्य समझना चाहिए। यह सब भगवान की ही कृपा है। ईश्वर ने दया करके हमें मनुष्ययोनि दी है। इसी योनि में हम अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसलिए आज मैं कुछ बातें बताऊंगा जिससे हमारी उन्नति हो सके। आशा है कि आप उन पर भली प्रकार विचार करेंगे। हमारे जीवन को चार भागों में बॉटा गया है। इनको 'आश्रम' के नाम से संबोधित किया गया है।

आश्रम चार है। मनुष्य जीवन के यह चार भाग हैं! पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। जब मनुष्य पैदा होता है तो कच्चा होता है! ना ज्ञान होता है, न शक्ति, न कुछ कर सकता है! न अपनी रक्षा कर सकता है! पहले माता–पिता उसकी देखभाल करते हैं और उसको चलना– फिरना, बैठना–उठाना, खाना–पीना, बोलना–चालना सीखते हैं। कुछ बड़ा होने पर वह गुरु के पास पढ़ने के लिए बिठला जाता है! इसी को ब्रह्मचर्य आश्रम कहते हैं। इसकी अवधि कम से कम २५ साल की रखी गई है। जैसे कच्ची ईंट भट्टे में पककर

मजबूत बन जाती है, इसी प्रकार २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य आश्रम की भट्टी में रहकर मनुष्य पक जाता है और शक्तिशाली हो जाता है। यदि ब्रह्मचर्य का विधान और प्रबंध ठीक है, तो देश और जाति के नागरिक पक्के और बलवान होते हैं और उनको आगे की यात्रा में कुछ कठिनाई नहीं होती!यदि ईंट का भट्टा अच्छा नहीं है, तो ईंटें कच्ची और निर्बल होगी और उनसे बना हुआ मकान भी जल्दी गिर जाएगा।

इन २५ वर्षों के ब्रह्मचर्य का प्रबंध तीन व्यक्तियों के हाथ में है। एक माता ५ वर्ष तक बच्चे का पालन करती है। यदि माता योग्य हो तो वह अपने बच्चों को अच्छे–अच्छे बातें सीखाये! माॅ की गोद में पलता हुआ योग्य माता का बच्चा बिना परिश्रम के बहुत सी ज्ञान की बातें सीख जावेगा! यदि माता कुलक्षिणी है, तो उसका बच्चा आरंभ से ही बुरी बातें सीखेगा और उसको फिर सुधारने में कठिनाई पड़ेगी।

५ वर्ष के पीछे बच्चा पिता के साथ रहने लगता है! यदि पिता विद्वान और नेक चलन है, तो बच्चा भी वैसा ही होगा। बुरे बाप का बेटा भी बुरी ही बातें सीखेगा!

तीसरा गुरुः –जब बच्चा ८ साल के लगभग हो तो उसका उपनयन संस्कार (जनेऊ) कर के उसे अच्छे गुरु की पाठशाला में भेज देवें! यह नियम लड़के और लड़की दोनों के लिए समान है। छोटे आयु में भाई–बहन माॅ–बाप के साथ रहते हैं। बड़े होने पर उनको अपनी असमानता का ज्ञान होने लगता है। अतः लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में योग्य अध्यापिकाओं के पास पठान बिठालाना चाहिए और लड़कों को लड़कों की पाठशाला में उपनयन या जनेऊ दोनों का होना चाहिए!

ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी को तीन बातें अवश्य सीखनी चाहिएः –

(१) कुचेष्टा और बुरी बातों से बचकर ब्रह्मचर्य रखना और व्यायाम (कसरत) आदि करना, सरल जीवन रखना, बुरी रीति के शौकों से बचना! इससे शरीर पुष्ट हो जाए, रोग ना लगे!

(१) विद्या पढ़ना।

(३) दूसरों के साथ अच्छा बर्ताव करना, ईश्वर से डरना और परोपकार के लिए स्वार्थ त्याग करना!

जब लड़का २५ वर्ष का हो जाए और लड़की १६वर्ष की, तो दूसरा आश्रम आरंभ होता है! इसका नाम है 'गृहस्थ आश्रम'।

बचपन में विवाह नहीं करना चाहिए! इससे मनुष्य को रोग लग जाते, संतान कमजोर होती और जाति नष्ट हो जाती है! भारतवर्ष में जब से बच्चे बच्चियों के विवाह होने लगे ब्रह्मचर्य आश्रम की प्रथा बिगड़ गई और गृहस्थी लोग दुख भोगने लगे! पक्के ब्रह्मचारी ही सुखी गृहस्थ हो सकते हैं! गृहस्थियों का काम हैः –

एक, संतान उत्पन्न करना और उसको योग्य बनाना!

दो, धन कमाना– धर्म से, ना कि अधर्म से!

तीन, दान देना और दूसरे आश्रमों का पालन करना!

चार, देश और जाति को सुसंगठित करना और मनुष्य जाति को बुरी बातों से बचाना!

तीसरा आश्रम है वानप्रस्थ या वन जाने का! आश्रम वन में जाकर तप करना और संसार का मोह छोड़ देना!

चौथा आश्रम है सन्यास आश्रम! सन्यासी सब प्रकार का भेदभाव और मोह छोड़कर संसार को उपदेश देता और गृहस्थों को बुरी बातों से बचाता है!

इन चार आश्रमों को पूरा पालन करने से मनुष्य का लोक और परलोक दोनों बनता है! मरने पर उसे कष्ट नहीं होता और मरने के पश्चात उसको अच्छा जन्म मिलता अथवा मोक्ष की प्राप्ति होती है! वानप्रस्थ और सन्यास होने के लिए वैराग्य की जरूरत है! जो गृहस्थी लंपट, बीमार या कमजोर मन का है, वह वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम को भी बदनाम करता है!इन चारों आश्रमों में यम और नियम का ठीक पालन आवश्यक है।

शिवदत्तः स्वामी जी यम और नियम क्या है?

स्वामीजीः यम पॉच हैः **–तत्र अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यमाः**।(योग दर्शन साधनपाद सूत्र ३०) अर्थात् एक, अहिंसा सब प्राणियों के प्रति प्रेम का व्यवहार करना! दो, सत्य! तीन, अस्तेयः मन, वचन, कर्म से चोरी ना करना! चार, ब्रह्मचर्य! पॉच, अपरिग्रहः लोभ, अभिमान आदि दोषों से रहित होना!

नियम भी पॉच हैः **–शौच संतोष तपः स्वाध्याय ईश्वरप्रणिधानानि नियमाः।**(योग दर्शन साधन पाद सूत्र ३२)। अर्थात् एक,शौचः स्नान आदि से शरीर को पवित्र रखना!दो, संतोष अर्थात् पुरुषार्थ करते हुए जो मिल जाए उसी पर संतुष्ट रहना! तीन, तप अर्थात् धर्म युक्त कामों को कष्ट सहते हुए भी करना। चार, स्वाध्याय अर्थात् वेद शास्त्र आदि सद्ग्रन्थों का पढ़ना! पॉचवा, ईश्वरप्रणिधान अर्थात् अपनी आत्मा को ईश्वर भक्ति में लगाना!

ज्ञानचंद्रः स्वामीजी! यज्ञ किसको कहते हैं? उसके करने से क्या लाभ होता है?

स्वामीजीः वेदों में यज्ञ की बड़ी महिमा है! यजुर्वेद में लिखा है–**आयुर्यज्ञेन कल्पताम्**(यजुर्वेद अध्याय २२ मंत्र ३३) हमारी आयु यज्ञ से बनाई जाय!

मुख्य यज्ञ पॉच है, जिनको पंचमहायज्ञ कहते हैं। हर आदमी को यह पॉचों यज्ञ रोज करने चाहिए! इन यज्ञों के नाम यह हैं – एक, ब्रह्मयज्ञ! दो, देवयज्ञ! तीन,पितृयज्ञ! चार, अतिथियज्ञ! पॉच, भूतयज्ञ!

ब्रह्मयज्ञ में अग्नि जलानी नहीं पड़ती! ना कुंड खोदना या आहुतियॉ देना पड़ता है! ब्रह्मयज्ञ के दो मुख्य भाग हैः– ईश्वर की उपासना और वेदों का स्वाध्याय! ईश्वर प्रार्थना के विषय में हम तीसरी कथा में कह चुके हैं। प्रातः काल स्नान आदि करके ईश्वर का ध्यान

करना चाहिए! संध्या की पूरी विधि संध्या की पुस्तकों में दी हुई है। जो लोग कम पढ़े हैं, वे गायत्रीमंत्र का जाप कर सकते हैं। गायत्री मंत्र यह हैः –

ओ३म भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात्।।(यजुर्वेद अध्याय ३६ मंत्र३)

अर्थः – गायत्रीः (ओ३म्) परमेश्वर का नाम है, सब प्रकार से रक्षा करने वाला (भूः) सत्तावान् (भुवः) चेतनस्वरूप (स्वः) सुख कारक (सवितुर्दवस्य) उस प्रेरक देव की (वरेण्यम्) कल्याणकारी, शुभ (भर्गः) पाप नाशक शक्ति को (धीमहि) हम धारण करें। (यो नः धियः प्रचोदयात्) वह ईश्वर हमारी बुद्धियों को ठीक कामों में लगावें।

गायत्रीमंत्र को सावित्रीमंत्र भी कहते हैं। इसको बड़ा पवित्र माना गया है।

अथ सावित्री। सविता वै देवानाम् प्रसविता तथोहाऽस्माऽते सवितृप्रसूता एव सर्वेकामाः समृत्यन्ते।।(शतपथ ब्राह्मण कांड २ अध्याय ३ ब्राह्मण ४ कंडिका ३६) अर्थात् ईश्वर सब देवों का प्रेरक है। उसकी प्रेरणा से सब कामनाएँ सिद्ध होती है।

तीन और मंत्र प्रार्थना के लिए दिए जाते हैं, इनको भी पढ़ना चाहिए!जैसे–जैसे योग्यता बढ़े, अन्य पुस्तकों से अच्छे–अच्छे वेद मंत्रों का पाठ करना चाहिए!

मंत्र २: **विश्वानी देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुवः।।**(यजुर्वेद अ०३० मं०३) अर्थः – (देव सवितः) हे सब प्रकार के प्रेरक ईश्वर! (विश्वानि दुरितानि) सब बुराइयों को (परासुव) दूर कीजिए! (यद् भद्रं) जो शुभ गुण हों (तत् नः आसुवः) वह हमको प्राप्त कराइए।

मंत्र ३: (**यां मेधां (देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।।**

(यजुर्वेद ३२ / १४)अर्थः–(**यां मेधां**)जिस बुद्धि की (**देवगणाः पितरश्च**)विद्वान और पितर लोग (**उपासते**) याचना करते हैं,(**तया मेधया**) उस बुद्धि से (**अद्य**)आज(**माम्**) मुझको (**अग्ने**)हे परमेश्वर!(**मेधाविनं कुरू**)बुद्धिमान बनाइये!

मंत्र ४: **अग्ने नय सुपथा विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।**

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम।।(यजुर्वेद ४० / १६)

अर्थः – (**अग्नेदेव**) हे ईश्वर प्रभो!(**विश्वानिवयुनानि**)आप सब ज्ञानों को (**विद्वान्**) जानते हैं! (**अस्मान्**) हमको (**राये**)आनंद रूपी धन के लिए (**सुपथानय**) अच्छे पथ पर लगाइए!(**अस्मत्**) हमसे (**जुहुराणम्**) भयानक पाप को (**युयोधि**)दूर रखिए!(**ते**)आपकी (**नमःउक्तिं**)बहुत–बहुत स्तुति (**विधेम**) हम करते हैं।

दूसरा यज्ञ है देवयज्ञ! देवयज्ञ को होम या अग्नि होम भी कहते हैं। इसकी विधि यह हैः – संध्या के पश्चात एक तांबे या मिट्टी के कुंड में आम, पीपल, पलाश आदि की सूखी लकडियां जिनको समिधा कहते हैं, चुन लीजिए और मंत्रों को पढ़कर घी सामग्री की

आहुतियां दीजिए। (हवन सामग्री में क्या–क्या होना चाहिए: – छारछबीला, नगरमोथा, बालछड़, कपूरकाचरी, चंदन चूरा,गरी, मखाना,छुआरा, चावल, तिल जौ– इनको छँटाक छँटाक भर कूट कर मिला लो और एक तोला बड़ी इलायची और दो तोला लौंग भी मिला दो। हवन करते समय आधी छटांक सामग्री में एक तोला चीनी मी मिला लेनी चाहिए। एक तोला घी से भी सस्ता हवन किया जा सकता है। महंगाई के दिनों में न करने से थोड़ा करना अच्छा है) सामग्री में सुगंधयुक्त पदार्थ और शक्कर या चीनी मिलानी चाहिए! घी शुद्ध होना चाहिए! हवन के मंत्र पंचमहायज्ञ विधि में दिए हुए हैं। जो पढ़े नहीं और मंत्र याद करने की शक्ति नहीं रखते, वह गायत्री मंत्र पढ़कर ही सोलह आहुतियॉ दे दिया करें। हर अमावस्या और पूर्णमासी के दिन किसी योग्य पंडित को बुलाकर यज्ञ कर दिया करें। इससे घर और गॉव की हवा शुद्ध होगी। वेदों का स्वाध्याय होगा और सुगंध मस्तिष्क में पहुॅचने से बुद्धि बढ़ेगी!

आजकल तंबाकू और बीड़ी पीने का इतना रिवाज है कि तंबाकू का जहर हवा में फैल जाता है और वह बहुत से रोग उत्पन्न कर देता है। मॉ–बाप बच्चों को गोद में लिए हुए या चारपाई पर पास लिटाए हये तंबाकू के धुएँ छोड़ते रहते हैं। इससे बहुत सी बीमारियॉ पैदा होती है। अगर तंबाकू पीना छोड़ दिया जाए और हवन का सुगंध युक्त धुऑ हवा में फैले तो रोग के कीटाणु भी मर जाए और लोगों की बुद्धि भी उज्जवल हो जाए!

हर गृहस्थ को चाहिए कि वह रोज हवन किया करें! बहुत से लोग समझते हैं कि यज्ञ में पशुओं को बलि चढ़ाकर उनका मांस डाला जाता था! यह बात गलत है और अज्ञानी, स्वार्थी, वाममार्ग पर चलने वाले लोगों की उड़ाई हुई है। वेद में पशु के मांस को होम में डालने का विधान नहीं है। यज्ञ का तो प्रयोजन ही यह है कि किसी की हिंसा न हो और जगत का उपकार हो!

रामपदार्थ:– श्रद्धा और तर्पण करना चाहिए या नही?

स्वामीजी: श्रद्धा और तर्पण मरे हुए पितरों के लिए नहीं किया जाता!जीवित मॉ–बाप की सेवा करना ही श्राद्ध है और यही तर्पण! इसको पितृयज्ञ कहते हैं। पितृयज्ञ तीसरा महायज्ञ है। जो माता या पिता मर गए उनका प्रथम तो पता ही नहीं लगता कि वह कहॉ है!फिर उनको खाना कहॉ पहुॅचावे और कैसे? उन्होंने तो दूसरी योनियों में जन्म ले लिया, जैसी करनी वैसी भरनी! जैसे कर्म उन्होंने किया उसी के अनुसार उनको जन्म मिल गया!

स्वार्थी पंडितों ने अपने खाने के लिए यह मिथ्या बात उड़ाई है कि पितरों को पिंड दिया देना चाहिए। पिंडों को खाने के लिए पितर तो नहीं आते! हॉ! हलवा पूरी खाने के लिए पंडित पुजारी और महाब्राह्मण आ जाते हैं! यह स्वार्थी लोगों की करतूत है! बुद्धिमान लोग इनके जाल में नहीं फॅसतें! इस विषय में एक कथा दी जाती है: –

एक जाट था। उस के घर में एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देनेवाली थी। दूध

उस का बड़ा स्वादिष्ठ होता था। कभी–कभी पुरोहितजी के मुख में भी पड़ता था। उस का पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय का संकल्प करा लूंगा। कुछ दिनों में दैवयोग से उस के बाप का मरण समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोड़ने का समय आ पहुंचा। उस समय जाट के इष्ट मित्र और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे। तब पुरोहितजी ने पुकारा कि यजमान! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट ने १०) रुपया निकाल पिता के हाथ में रख कर बोला पढ़ो संकल्प। पुरोहितजी बोला–वाह–वाह! क्या बाप वारंवार मरता है? इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती हो, बुड्ढी न हो, सब प्रकार उत्तम हो। ऐसी गौ का दान करना चाहिये।

जाट जीः – हमारे पास तो एक ही गाय है उस के विना हमारे लड़के–बालों का निर्वाह न हो सकेगा इसलिये उसको न दूंगा। लो २०) रुपये का संकल्प पढ़ देओ और इन रुपयों से दूसरी दुधार गाय ले लेना।

पुरोहित जीः – वाह जी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो? क्या अपने बाप को वैतरणी नदी में डुबा कर दुःख देना चाहते हो। तुम अच्छे सुपुत्र हुए?तब तो पुरोहित जी की ओर सब कुटुम्बी हो गये क्योंकि उन सब को पहले ही पुरोहित जी ने बहका रक्खा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सब ने मिल कर हठ से उसी गाय का दान उसी पुरोहितको दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। उसका पिता मर गया और पुरोहित जी बच्छा सहित गाय और दोहने की बटलोही को ले अपने घर में गाय बछड़े को बांध बटलोही धर पुनः जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशानभूमि में जाकर दाहकर्म्म कराया। वहाँ भी कुछ–कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात् दशगात्र सपिण्डी कराने आदि में भी उस को मूंडा। महाब्राह्मणों ने भी लूटा और भुक्खड़ों ने भी बहुत सा माल पेट में भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने जिस किसी के घर से दूध मांग–मूंग निर्वाह किया। चौदहवें दिन प्रातःकाल पुरोहित जी के घर पहुंचा। देखा तो गाय दुह, बटलोई भर, पुरोहित जी की उठने की तैयारी थी। इतने ही में जाट जी पहुंचे। उस को देख पुरोहित जी बोला आइये! यजमान बैठिये!

(जाट जी) तुम भी पुरोहित जी इधर आओ।

(पुरोहित जी) अच्छा दूध धर आऊं।

(जाट जी) नहीं–नहीं दूध की बटलोई इधर लाओ। पोप जी विचारे जा बैठे और बटलोई सामने धर दी।

(जाट जी) तुम बड़े झूठे हो।

(पुरोहित जी) क्या झूठ किया?

(जाट जी) कहो! तुमने गाय किसलिये ली थी?

(पुरोहित जी) तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तरने के लिये!
(जाट जी) अच्छा तो वहां वैतरणी के किनारे पर गाय क्यों न पहुंचाई? हम तो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बांध बैठे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कितने गोते खाये होंगे?
(पुरोहित जी) नहीं–नहीं, वहां इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बन कर उतार दिया होगा।
(जाट जी) वैतरणी नदी यहाँ से कितनी दूर और किधर की ओर है।
(पुरोहित जी) अनुमान से कोई तीस क्रोड़ कोश दूर है क्योंकि उञ्चास कोटि योजन पृथिवी है और दक्षिण नैऋर्त दिशा में वैतरणी नदी है।
(जाट जी) इतनी दूर तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो उस का उत्तर आया हो कि वहां पुण्य की गाय बन गई। अमुक के पिता को पार उतार दिया; दिखलाओ?
(पुरोहित जी) हमारे पास गरुड़पुराण के लेख के विना डाक वा तारवर्की दूसरी कोई नहीं।
(जाट जी) इस गरुड़पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?
(पुरोहित जी) जैसे सब मानते हैं।
(जाट जी) यह पुस्तक तुम्हारे पुरुषाओं ने तुम्हारी जीविका के लिये बनाया है क्योंकि पिता को विना अपने पुत्रें के कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुंचा दूंगा और उन को पार उतार पुनः गाय को घर में ले आ दूध को मैं और मेरे लड़के बाले पिया करेंगे। लाओ! दूध की भरी हुई बटलोही, गाय, बछड़ा लेकर जाट जी अपने घर को चला।
(पुरोहित जी) तुम दान देकर लेते हो तुम्हारा सत्यानाश हो जायगा।
(जाट जी) चुप रहो! नहीं तो तेरह दिन लों दूध के विना जितना दुःख हम ने पाया है सब कसर निकाल दूंगा। तब पुरोहित जी चुप रहे और जाट जी गाय बछड़ा ले अपने घर पहुंचे।

शिवदत्तः पशु पक्षियों को खिलाना चाहिए या नहीं?

स्वामीजीः चौथा महायज्ञ है भूतयज्ञ! भूत का अर्थ है जीवित प्राणी, गाय, कुत्ता, चौकीदार तथा अन्य जीव या मनुष्य जो हमारी सेवा करते हैं! इनको अपने भोजन का कुछ भाग देना चाहिए! ऐसे प्राणियों को खिलाने से कोई लाभ नहीं जो हमारे सामान उठा ले जाएं या लोगों को कष्ट पहुंचा दें! जैसे तीर्थ के बंदर! भारतवर्ष के बहुत से नगरों में लोग बंदरों को खाना देते हैं। यह बंदर इतने शरीर हो जाते हैं कि लोगों के जूते टोपी रोटी आदि ले जाते हैं। कहीं–कहीं मकान की खपरेंलें तोड़ देते हैं। लोग समझते हैं कि बंदर हनुमान जी की संतान है, अतः इनका दंड नहीं देना चाहिए! यह भ्रांति है! प्रथम तो बंदर हनुमान जी की संतान नहीं! दूसरे यदि कोई रामचंद्रजी के वंश का चोरी करें तो आप उसे दंड दिलाएंगे या

यूं ही छोड़ देवें? जब आप राम की संतान को क्षमा नहीं करते तो हनुमान की संतान की दुष्टता को क्यों ना रोका जाए!

शिवदत्तः भूत प्रेत से तो हम लोग दूसरा अर्थ समझते हैं! बहुत से मनुष्य मरकर भूत हो जाते हैं और वह हमें हानि पहुँचाते हैं!

स्वामीजीः जनता में भूत प्रेत के बारे में बहुत सी बातें कही जाती है। ये सब ऊंटपटांग है। इस संबंध में याद रखो कि भूत का अर्थ मरा हुआ भूत प्रेत नहीं है। भूत का अर्थ है प्राणी! जैसा वेद में आया है कि सब भूतों को मित्र की दृष्टि से देखो! इसी को बलिवैश्वदेवयज्ञ भी कहते हैं। बलि का अर्थ मारना नहीं है! बलि का अर्थ है भोजन! बलिवैश्वदेवका अर्थ है उन प्राणियों को भोजन देना जो हमारे आश्रित हैं।

पॉचवा महायज्ञ है अतिथियज्ञ! अतिथि कहते हैं साधु महात्माओं को जो बिना तिथि नियत किये हमारे घरों में आ जाते हैं। गृहस्थ को चाहिए कि ऐसे महात्माओं का आदर पूर्वक सत्कार करें! इससे एक तो साधु महात्माओं पर श्रद्धा होती है और अपने भीतर सत्य के लिए प्रेम होता है!दूसरे उनके उपदेशों से हमारा आचार सुधरता है!

इनके अतिरिक्त और बड़े–बड़े यज्ञ भी है जो विद्वान पंडितों की सहायता से किए जाते हैं। यहॉ उनका वर्णन नहीं किया जाता!

शिवदत्तः संस्कार किसे कहते हैं? इनसे मनुष्य का क्या कल्याण होता है?

स्वामीजीः संस्कार उस त्य का नाम है जो मनुष्य की आयु के भिन्न–भिन्न भागों में उसकी संतान के लिए किया जाता है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि हर स्त्री पुरुष को आयु भर में सोलह संस्कार करने चाहिए!

गर्भाधान संस्कार,पुसवन संस्कार, सीमंतोन्नयन संस्कार यह तीन जन्म से पूर्व!जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, मुंडन संस्कार,कर्णबेध संस्कार –यह छः बालकपन में!उपनयन और वेदारंभ संस्कार विद्या के आरंभ में यह दो! कुछ बड़ा होने पर समावर्तन और विवाह–यह दो शिक्षा के उपरांत! वानप्रस्थ और सन्यास संस्कार–यह गृहस्थ आश्रम के पश्चात् वृद्धावस्था में! अंत्येष्टि संस्कार – मरने के पश्चात्! इनका विधान ऋषि दयानंद की लिखी हुई 'संस्कारविधि' नामक पुस्तक में है। इन सब संस्कारों में हवन होता है और इष्टमित्रों को इकट्ठा किया जाता है। यहॉ चार संस्कारों का मुख्यतः वर्णन किया जाता है: –

(१) **नामकरण संस्कारः** जन्म से ११वें या ३६० वें दिन करना चाहिए!नाम सुंदर और सार्थक रखना चाहिए! घसीटा आदि नाम मत रखो!

(२)**उपनयन संस्कारः** जिसको यज्ञोपवीत या जनेऊ कहते हैं। हवन के पश्चात गुरुजनेऊ देता है और गायत्री का उपदेश करता है। विद्या पढ़ना उसी दिन से शुरू हो जाता है।

(३)**विवाह संस्कारः** लड़की का सोलह वर्ष और लड़के का पच्चीस वर्ष की आयु से पहले

विवाह नहीं होना चाहिए!वर–वधु योग्य और स्वस्थ होने चाहिए!अत्यंत बालक या वृद्ध का विवाह न होना चाहिए! विवाह में दहेज ना लेना चाहिए! ना आतिशबाजी या नाच आदि करना चाहिए! विवाह में जो वर–वधु प्रतिज्ञाएँ करते हैं उनको ध्यान से सुनना चाहिए और उस पर कार्य करना चाहिए!

(4) **अंत्येष्टि संस्कार** : मरने पर लाश को चंदन, घी, सामग्री आदि के साथ जलाना चाहिए! पिंड नहीं देना चाहिए! न मरने वाले के लिए श्राद्ध या तर्पण करना चाहिए! घर में हवन करके गृह शुद्धि करनी चाहिए।

भजन

आज मिल सब गीत गाओ उसे प्रभु के धन्यवाद
जिसका यश नित गाते हैं , गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद ।।१ ।।

मन्दिरों में कन्दरों में , पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ – सौ बार मुनिवर धन्यवाद । । २ ।।

करते हैं जंगल में मंगल , पक्षिगण हर शाख पर ।
पाते हैं आनन्द मिल , गाते हैं स्वर भर धन्यवाद । । ३ । ।

कूप में तालाब में , सागर की गहरी धार में ।
प्रेम– रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद ।।४ ।।

शादियों में कीर्तनों में , यज्ञ और उत्सव के आदि ।
मीठे स्वर से चाहिए , करें नारी – नर सब धन्यवाद ।।५

गान कर ! अमीचन्द ! भजनानन्द ईश्वर स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता , कान धर – धर धन्यवाद ।।६ ।।

महर्षि दयानंद सरस्वती–१५

लेखकः श्री पंडित हरिश्चंद्र जी विद्यालंकार

(गतांक में आपने पढ़ा –महर्षि द्वारा बतायी आठगप्पों और आठ सत्यों के बारे में, हलधर ओझा और लक्ष्मण शास्त्री से कानपुर शास्त्रार्थ यहॉ तक महर्षि की विचारधारा और अभ्यास के साथ ही कुछ मनोरंजक प्रसंग! इस अंक में पढ़ें महर्षि की चुनौती और मूर्तिपूजा के निर्भय विरोध से काशीराज और काशी के मुफ्तखोर पोंगा पण्डितों में हलचल, काशी शास्त्रार्थ में पोंगा पण्डितों के साथ मिलीभगत से काशीराज का भी छल व महर्षि पर विष प्रयोग–संपादक)

अध्याय ६–संगठन से पूर्व

(संवत्१६२४ से संवत १६३० तक)

पाखण्ड का दुर्भेद्य गढ़– काशी

रामनगर में : कानपुर से चलकर महर्षि शिवराजपुर, फतेहपुर और मिर्जापुर आदि स्थानों में विचरण करते हुए प्रयाग पधारे। यहॉ किसी शिवसहाय नामक पंडित की लिखी वाल्मीकि रामायण की टीका महर्षि के हाथ लगी। शिवसहाय बड़ा अभिमानी था। महर्षि ने इसकी रचना में अनेक अर्थदोष एवं शब्ददोष दिखाए। इस पर वह इनसे शास्त्रार्थ के लिए उद्यत हो गया। परंतु महर्षि की वाग्मिता के सम्मुख उसकी एक न चली। वह परास्त होकर गंगा के तट के सहारे रामनगर की ओर चल पड़ा। महर्षि को मौज आई, तो वह भी उसके पीछे चल पड़े।

महर्षि ने देखा शिवसहाय काशी नरेश के पास जाकर छिप गया है। इस समय संवत्१६२६(सन १८६६) का आश्विन मास चल रहा था। महर्षि ने वह रात राजवाटिका के समीप रेती में ही बीताई। प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत हो उन्होंने शिवसहाय की टीका के खण्डन से ही अपना प्रचार आरंभ किया और इस टीकाकर के लिए कहा कि वह राजा के महल में जाकर छुप गया है। परंतु शिवसहाय फिर सामने नहीं आया। वह जैसे तैसे घर की ओर भाग गया। इसके पश्चात् महाराज ने काशी नरेश की हस्तीशाला के समीप एक वृक्ष के नीचे अपना आसन लगाया।

काशी नरेश का व्यवहार–काशी नरेश ईश्वरीप्रसादनारायण सिंह साधु, संन्यासी और परमहंसों के प्रति भक्ति भावना केधनी थे। अपने राज्य में पधारने पर महर्षि के भोजन आदि की व्यवस्था उन्होंने अपने स्वभाव अनुसार की। प्रतिदिन आठ आना नियत कर दिया और पश्मीने का एक बहुमूल्यअल्बान भेंट के लिए भेजा। महर्षि ने अलवान अस्वीकृत कर दिया। महाराज के भेजे राजपंडित भी महर्षि की सेवा में पहॅुचे। उनके मुख से यह सुनकर कि

महर्षि मूर्तिपूजा का खंडन करते हैं, महाराज रुष्ट हो गए। कहते हैं कि महाराज अपने हाथ से पार्थिव लिंग बनाया करते थे। उन्हें ऐसा करते देख महर्षि ने उनसे पूछा कि "आप यह कुम्हार का सा खेल क्या कर रहे हैं?"

महाराजा ने एक बार इस आशय से कि महर्षि प्रतिमापूजन का विरोध छोड़ दें, उन्हें राज्य से १00) रुपये मासिक वृत्ति दिए जाने की इच्छा प्रकट की। महर्षि के सम्मुख भला यह भी कोई प्रलोभन था! महर्षि का उत्तर था कि यदि महाराज अपना सारा राज्य भी मुझे दे दे तो भी मैं मूर्तिपूजा का खंडन नहीं छोडूंगा!अतएव महाराज की प्रबल इच्छा हुई कि महर्षि को शास्त्रार्थ में हराया जाए।

परंतु महाराज उन्हें अपमानित अथवा तंग नहीं करना चाहते थे। एक बार ५0–६0 वैरागियों ने एकत्र होकर महर्षि को गालियॉ दी। जब महाराज को इस घटना का ज्ञान हुआ तो उन्होंने इस घटना पर वैराकियों को डॉटते डपटते स्पष्ट कह दिया कि जब तक वे राम नगर में है तब तक वह हमारे अतिथि हैं। उनसे शास्त्रार्थ भले ही कोई करें, उद्दंडता नहीं कर सकता!

विश्वास उठ चला–महर्षि की चर्चा के साथ मूर्तिपूजा की चर्चा सर्वत्र चल रही थी। पंडित मंडली में खलबली मची हुई थी। मूर्तिपूजा के संबंध में शंकाएं तो जनसाधारण और पंडित मंडली में पहले भी विद्यमान थी। परंतु, प्रकट रूप से इसका प्रतिवाद करने का नैतिक बल नहीं था। महर्षि द्वारा इस आंदोलन का आरंभ कर देने पर अब शनैः शनैः ऐसे जन भी अपनी सहमति व्यक्तिगत और सार्वजनिक रूप से करने लगे।

एक दिन बाबू अविनाशीलाल खत्री और मुंशी हरिवंशलाल पंडित ज्योतिषस्वरूप उदासी को साथ ले रामनगर में महर्षि के दर्शनों को पधारे। महाराज अपने आसन पर वृक्ष के नीचे बैठे कुछ पंडितों से मूर्ति पूजा पर वार्तालाप कर रहे थे। वार्तालाप २ घंटे तक होता रहा। पंडित ज्योतिस्वरूपजी ने इस पर अपना मंतव्य प्रकट करने के लिए कहा गया तो कहने लगे– दयानंद जी ठीक ही कह रहे हैं! मैंक्या कहूँ?

महाराजा ईश्वरीप्रसादनारायण सिंह जी ने स्वामी निरंजनानंद जी से इस संबंध में अपनी शंका का समाधान किया। पूछा– "वेद में मूर्तिपूजा व रामलीला का विधान है या नही? दयानंद कहते हैं कि नहीं है।" स्वामी निरंजन निरंजनानंद जी ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि वेद में तो इनका विधान नहीं है परंतु लोक रीतिचली आई है।

कुछ भी हो, मूर्ति पूजा के खण्डन मंडन की आंधी से काशी की मंडली और जनसाधारण सभी के मनों में उथल–पुथल मच रही थी। तब महर्षि लगभग 1 मास का समय रामनगर में बिताकर कार्तिक कृष्ण २ अथवा ३ संवत्१९२६(सन १८६९ ई0) को काशी पधारे। वे पहले गोसाईंजी के बाग में उतरे और फिर दुर्गाकुंड पर स्थित अमेठी के राजा के बाग में चले गए।

काशी की महिमाः –महर्षि के आगमन का समाचार विद्युत वेग से नगर भर में फैल गया।

चिरकाल से काशी नगरी का हिंदू जाति के मन में विशेष स्थान रहा है। काशी में मरा सीधा स्वर्ग को जाता है–यह कहावत प्रसिद्ध है। शिवजी के त्रिशूल पर स्थित काशी नगरी की स्वयं शिवजी महाराज अपने अगणित गणों सहित रक्षा करते हैं, विद्या और असीम पांडित्य जी के धनी हजारों पंडित और शास्त्री ही मानो शिव के गण हों। महर्षि भी मानो अपने समग्र पांडित्य,वाद–विवाद–शक्ति और तर्कनासरणि की पारसमणि की परख से खरा जॉचने के लिए इस नगरी में आने को लालायित थे। पर काशीवासी पंडित और गुंडे दोनों को ही आश्चर्य था इस एकमात्र कोपिन धारी के विलक्षण साहस पर! ना इसके पास धन–बल था ना जन–बल! फिर भी एकाकी, निर्भय इस अप्रतिम दुर्भेद्य, पाखंडगढ़ की ओर बढ़ता चला! सत्य का अन्वेषण, सत्य का अंगीकार और सत्य के निश्चल प्रचार–यही उसकी एकमात्र टेक थी! यही उसके अनुपम चरित्र–बल का कारण था। इस शास्त्र के सामने वह सारे धन, जन और विद्या बल को नगण्य मानता था। अब तक के प्रचार और भ्रमण में महर्षि को अनुभव हो गया था कि जब तक काशी अपराजिता है, तब तक पौराणिक धर्म को हारा हुआ नहीं मान सकते! जो पंडित हारता, वह काशी की और व्यवस्था के लिए दौड़ता!

अब महर्षि की ललकार से काशी के पंडितों की सुख निद्रा टूट गई थी! ऋषि की गुरु गंभीर वाणी प्रभाव शून्य कैसे रहती? दुर्गा के दर्शन को जो कोई जाता, वह उनके उपदेश सुनने के लिए अवश्य रुकता और सुनकर मूर्ति पूजा में विश्वास रखना असंभव हो जाता! अधिकांश तो दर्शन किए ही बिना घर लौट आते! बेचारे पेट के पुजारी भी चिंतित हो उठे! महर्षि की दुर्गा के मंदिर में उपस्थिति उन्हें खलने लगी!

दिन और सप्ताह बीत रहे थ! मूर्तिपूजा का खंडन दिन दूना रात चौगुन बढ़ रहा था! काशी नरेश कैसे चुप रह सकते थे! पंडितों के सम्मुख अपना मंतव्य कह सुनाया। जनता का लाखों रुपया मूर्ति पूजा पर व्यय कराने वाले पंडितों का विद्याबल भला और क्या काम आता? दयानंद आज्ञहै। व्याकरण के अतिरिक्त कुछ नहीं जानता! वह इसाई है! अंग्रेजों का गुप्तचर है! आदि बहाने अब किस काम के ?–आज तो वह छाती पर चढ़कर मूंग दल रहा है! इसका कुछ उपाय होना चाहिए!

अंत में पंडितों ने १५ दिन तैयारी करने के पश्चात शास्त्रार्थ करने का निश्चय प्रकट किया! कार्तिक शुक्ल द्वादशी संवत्१९२६(सन १८६९ ई0) मंगलवार का दिन शास्त्रार्थ के लिए नियत हो गया!

तैयारी और जॉच–काशी के पंडितों ने दो प्रकार की तैयारी की। एक वर्ग ने अपने सिद्धांतों, विशेषतया मूर्तिपूजा के लिए प्रमाण संग्रह का कार्य करना आरंभ किया और दूसरा वर्ग जनता में महर्षि के उद्देश्य के विरुद्ध भ्रमजाल फैलाने और गुंडापन को उकसाने में संलग्न हो गया!

शास्त्रार्थ के लिए उत्तरदायी दिग्गज पंडितों ने शास्त्रार्थ केसरी के सम्मुख आने से पहले उसके विद्या बल की जॉच भी करनी आरंभ की। अपने विद्यार्थी भेज कर उनसे प्रश्न किए गए और स्वयं भी प्रच्छन्न रूप से पहुँचकर उनकी युक्तियों के बलाबल की जॉच की।

इनमें रामशास्त्री, बालशास्त्री और संभवतः राजाराम शास्त्री थे।

महर्षि के आसन पर कार्य योजना में कोई अंतर नहीं था। उन्हें नई खोज तो करनी नहीं थी। धूर्त और गुंडेपन को भी मन में स्थान नहीं था। इन दिनों पंडित ज्योतिषस्वरूप उदासी से निरंतर १४ दिन तक नवीन वेदांत पर विचार विमर्श होता रहा। पंडित ज्योतिस्वरूप ने महर्षि की सारी बातें स्वीकार की। उनके शास्त्रार्थ से पहले की यही तैयारी थी! इन्हीं पंडित जी ने काशीराज की सभा में बड़े विश्वास के साथ कहा था– "दयानंद से शास्त्रार्थ करने से पहले मुझ से शास्त्रार्थ कर लो!"

शास्त्रार्थ का दिन आया। भक्त बलदेव ने आशंका प्रकट की–महाराज काशी गुंडो की नगरी है! आप एकाकी है। यदि फर्रुखाबाद होता तो दस–बीस मनुष्य आपके भी होते! भक्त का अभिप्राय समझ महर्षि हँसे और बोलेः "योगियों का निश्चित सिद्धांत है कि सत्य का सूर्य अंधकार के महति से महति सेना पर अकेला विजय पाता है! जो पक्षपात रहित हो, ईश्वरानुकूल सत्य का उपदेश करता है, उसे भय कहाँ? सत्पुरुष डर कर सत्य को नहीं छुपाते! जान जाए तो जाए! परंतु सत्य रूप ईश्वर की आज्ञा न जाए!" – ऐसी है हम सरीखों की भावना! महर्षि की इस सत्यनिष्ठा से भक्तों का विश्वास जमा– वे निश्चिन्त होने लगे! महाराज ने क्षौर कराया, स्नान किया, सुंदर शरीर पर सुंदर मृतत्तका का लेप किया! पद्मासनस्थ हो ईश्वर का ध्यान किया और फिर भोजन किया!

काशी नरेश ने शास्त्रार्थ के लिए ही उद्योग नहीं किया अपितु ऋषि को नीचा दिखाने की धारणा के अनुकूल तैयारी की! कलेक्टर की इच्छा के विपरीत शास्त्रार्थ का दिन रविवार के अतिरिक्त कोई सा दूसरा दिन रखा! कलेक्टर व दूसरे राज्याधिकारियों की उपस्थिति में गड़बड़ की संभावनातो नहीं थी! महाराज महर्षि के विद्या–बुध्दिबल से परिचित थे। यदि महर्षि मूर्तिपूजा का खंडन ना करते तो वह उन्हें अपना गुरु मानते–ऐसी धारणा भी प्रकट कर चुके थे। मूर्तिपूजा के संबंध में महर्षि को नीचा दिखाना उनके कार्यक्रम का निश्चित अंग था!

भोजपुर थाने के थानेदार रघुनाथप्रसाद ने शांति व व्यवस्था की दृष्टि से निष्पक्ष प्रबंध करने का पूरा प्रयत्न किया। ५0 हजार जनों की भीड़ की संभावना और न्याय से शास्त्रार्थ होने देना उनका कर्तव्य था। दालान की खिड़की में महर्षि का आसन लगाया गया और उनके सामने प्रतिपक्षी पंडित का! एक तीसरा आसन काशी नरेश के लिए था–शेष पंडितों के लिए नरेश के पास बैठने का प्रबंध था!

महर्षि पर आतंक बिठाने की दृष्टि से पंडित लोग ताम–झामों पर सवार हो, चँवर डुलाते और जय बुलाते हुए सभा मंडप में पहुँचे। काशी नरेश पधारे और पंडित लोग राजा को आशीर्वाद देने के बहाने कोतवाल के निश्चित किए नियम के विरुद्ध महर्षि को घेर कर बैठ गए! व्यवस्था उन्होंने जानबूझकर बिगाड़ दी! महर्षि के पक्ष पोशाक पंडित ज्योतिस्वरूप आदि विज्ञजनों और दूसरे सहायकों को पहले तो बाग में घुसने ही ना दिया गया! पीछे कोतवाल के कहने पर आकर महर्षि के पास बैठ जाने पर भी बहाने से काशी नरेश ने उन्हें

महर्षि से दूर कर दिया! राजा ने कोतवाल के आक्षेप पर भी ध्यान न दिया। इसी अव्यवस्था में शास्त्रार्थ आरंभ हुआ। दो अंग्रेज पादरी भी शास्त्रार्थ में उपस्थित थे। पौराणिकों के २७ पंडितों से लोहा लेने वाले अकेले महर्षि थे। २७ पंडितों में स्वामी विशुद्धानंदजी, बालशास्त्री, शिवसहाय, माधवाचार्य, वामनाचार्य, ताराचरण, जयनारायण तर्कवाचस्पति, राधा मोहन तर्कवागीश, अंबिका दत्त आदि प्रमुख थे।

काशी शास्त्रार्थ– यहाँ हम इस शास्त्रार्थ का विवरण 'श्रीमद्दयानंद प्रकाश' से उद्धृत करते हैं –

सबसे प्रथम पण्डित ताराचरणजी नैयायिक स्वामीजीके सम्मुख हुए।स्वामीजीने उनसे पूछा, कि "क्या आप वेदों कों मानते हैं ?" ताराचरणजीने कहा, "जो भी वर्णाश्रम–धर्म में हैं वे सभी वेद को प्रामाणिक मानते हैं।"

तब स्वामीजीने कहाः–"वेद में पाषाण आदि की मूर्त्तियों के पूजने क्रम यदि विधान है तो उसका प्रमाण दीजिए, नहीं तो अप्रमाणता स्वीकार कीजिए"

ताराचरणः––"वेद में मूर्त्ति–पूजन का प्रमाण है अथवा नहीं है, यह उसे कहा जाय, जो एक वेद को ही प्रमाण मानता हो।"!

स्वामीजीः–"अन्न्र ग्रन्थ प्रमाण हैं अथवा अप्रमाण इस पर फिर विचार किया जायगा। इस समय मुख्य प्रमाण तो वेद ही है। वेदोक्त कर्म ही मुख्य कर्म हैं, दूसरे ग्रन्थों के बताये कर्म गौण हैं। वे वेदानुकूल होने ही से माने जा सकते हैं। इस लिए यदि वेद में प्रतिमा–पूजन की आज्ञा नहीं है तो उसका पूजन नहीं करना चाहिए।"!

ताराचरणजीः–"तो फिर आप मनुस्मृति को वेद–मूलक कैसे मानते हैं ?"

स्वामी जीः–"सामवेद के ब्राह्मण ने कहा है कि जो कुछ मनुने वर्णन किया है वह औषधियों का भी औषध है।"!

विशुद्धानन्दजी ने कहा, "रचनाकी अनुपपत्ति–असिद्धि होने से अनुमान–द्वारा वर्णित प्रधान जगतका कारण नहीं है; व्यास के इस सूत्र को वेदमूलकसिद्ध कीजिए।"

स्वामी जीः–"उपस्थित वाद के भीतर यह प्रश्न नहीं आता।"!

विशुद्धानन्दजीः–"प्रकरण से बाहर है तो क्या हुआ ? यदि, तुम्हें इसका समाधान आता है तो कह दो।"

स्वामी जीः –"इसका पूर्वापर पाठ देखकर समाधान किया जा सकता है।"

विज्द्धानन्दजीः–"यदि सब कुछ स्मरण नहीं था तो काशी में शास्त्रार्थ करने आये ही क्यों थे?"

स्वामीजीः–––"क्या आपको सब कुछ कण्ठाग्र है ?"

विशुद्धानन्दजीः– हॉ, हमें सब कुछ स्मरण है।"!

स्वामीजीः–"तब बताइये धर्म्म के कितने लक्षण हैं ?

विशुद्धानन्दजीः–––"जो वेद में कहे फलसहित कर्म हैं, वही धर्म्म है।""

स्वामीजीः–"यह तो आपका वाक्य है। कोई शास्त्रीय प्रमाण दीजिए"!

विशुद्धानन्दजीः–"धर्म्म का लक्षण 'प्रेरणा' कहा गया है।"
स्वामीजीः–यह तो ठीक है कि प्रेरणा धर्म्म का लक्षण है, परन्तु प्रेरणा कहते हैं श्रुति–स्मृतिकी आज्ञाको। सो श्रुति–स्मृति की प्रेरणा में धर्म्म के लक्षण कितने हैं, यह बताइये ?"
विशुद्धानन्दजीः–"धर्म्म का एक ही लक्षण है।"!
स्वामीजीः–शास्त्र में तो धर्म्म के दस लक्षण कहे हैं। तब आप एक कैसे कहते हैं ??
विशुद्धानन्दजीः–––"धर्म्म के दस लक्षण किस ग्रंथ में हैं ??"
उस समय स्वामीजीने मनु–स्मृतिमें वर्णित धृति आदि धर्म्म के दस लक्षणों वाला श्लोक पढ़कर सुनाया। इस पर विशुद्धानन्दजी तो अवाक हो गये; परन्तु वालशास्त्री कहने लगे, "हमने सम्पूर्ण धर्म्मशास्त्रका अध्ययन किया है। इस विषयमें कुछ पूछना हो तो हससे पूछिए।"!
स्वामीजीने कहा, "बहुत अच्छा, आप "अधर्म" के लक्षण बताइए।"!
बालशास्त्रीको इसका उत्तर कुछ भी न सूझा, इस लिए वे मौन हो गये !
अपने मुखिया सेना–पतियों के पॉव उखड़ते देख सारे पण्डित एक बार ही चिल्लाकर पूछने लगे, "बताओ, वेद में प्रतिमा! शब्द है अथवा नहीं ??
स्वामीजी ने शांत भाव से उत्तर दिया, "वेद में 'प्रतिमा' शब्द तो है।"!
फिर उन लोगों ने क्रम से पूछा, "यदि वेद में प्रतिमा शब्द हे तो किस प्रकरण में?और आप इसका खण्डन क्यों करते हैं??"
स्वामीजी ने उत्तर में कहा, "प्रतिमा! शब्द यजुर्वेदके ३२वें अध्यायके तीसरे मंत्र में है। यह सामवेद के ब्राह्मण में भी विद्यमान है । परन्तु पाषाण आदि की प्रतिमा के पूजन का विधान कहीं भी नहीं है, इस लिए मैं इसका खण्डन करता हूँ।"
उनके पूछने पर स्वामीजी ने उन प्रकरणों का विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिया, जिनमें प्रतिमा शब्द आया है। इसपर उच्छृंखल पण्डित चुप हो गये।
इतने काल में बालशास्त्रहजी को विश्राम मिल गया और वे फिर प्रश्न करने लगे। परन्तु दो तीन प्रश्न करके फिर मौनी बन गये।
इसके पश्चात् विशुद्धानन्दजी ने स्वामीजी से पूछा, "वेद केसे उत्पन्न हुए हैं ?"
स्वामीजीः––"वेद का प्रकाश ईश्वरने किया है।"
विशुद्धानन्दजीः–––"वेदों का प्रकाश किस ईश्वर से हुआ है? न्यायवर्णित ईंश्वरसे, या योग–कथित ईश्वरसे अथवा वेदान्त–प्रतिपादित ईश्वर से ?"
स्वामीजीः–"क्या आपके निश्चय में अनेक ईश्वर हैं?"
विशुद्धानन्दजीः–"ईश्वर तो एक ही है, परन्तु वेदों के प्रकाशक ईश्वर का क्या लक्षण है, यह बताइए।"
स्वामीजीः–"उसका लक्षण है सच्चिदानन्द।"
विशुद्धानन्दजीः–––ईश्वर और वेद में क्या सम्बन्ध है ?"

स्वामीजीः——"वेद और ईश्वर में कार्य–कारण का सम्बन्ध है।"!
विशुद्धानन्दजीः——–"जैसे मन में और सूर्या आदि में ब्रह्मबुद्धि करके प्रतीक उपासना करनी कही है, वैसे ही शालिग्राम आदि में ईश्वर भावना करके पूजने में क्या हानि है?
"स्वामीजीः——"शास्त्र में मन आदि में ब्रह्मोपासना करने का तो विधान है, परन्तु पाषाणादि में उपासना करने का वचन किसी भी शास्त्र में नहीं मिलता।"!
यह उत्तर सुनकर विशुद्धानन्दजी को तो अपनी वाणी को विराम देना पड़ा,परन्तु माधवाचार्य ने पूछा, "उद्‌बुध्यस्वाग्ने' इस मंत्र जो "पूर्त'शब्द पड़ा है उसका आप क्या अर्थ करते हैं ?और मूर्ति–पूजन अर्थ क्यों नहीं करते ???
स्वामीजीः– यहॉ "पूर्त" शब्द से कुओं, तड़ाग, वापी ओर उद्यान आदि लोक–हितकर कार्यों का ग्रहण किया जाता है। "पूते" शब्द "पूर्ति' का वाचक है । इससे मूर्त्ति–पूजा का ग्रहण कदापि नहीं हो सकता। विशेष जानना चाहते हो तो इस मन्त्रका निरुक्त और ब्राह्मण देख लीजिए।"
मूर्त्ति–पूजन के पक्ष में माधवाचार्य्य निरुत्तर हो गये और किंचिद् विश्राम लेकर फिर पूछने लगे, "पुराण शब्द वेदोंसें आया है कि नहीं?"
स्वामीजीः——–"'पुराण' शब्द तो वेद के अनेक स्थानों में विद्यमान है, परन्तु वह है पुरातन काल का वाची, सनातन अर्थ का बोधक। उससे ब्रह्मवैवर्त्त और भागवतादि पुराण ग्रन्थों का ग्रहण नहीं हो सकता।"
विशुद्धानन्दजीः——–"बृहदारण्यक उपनिषद में "पुराण" शब्द आया है, वह आपको प्रमाण हैं कि नहीं? यदि प्रमाण है तो बताओ, वहाँ "पुराण" शब्द किसका विशेषण है ?"
स्वामीजीः——"बृहदारण्यक का 'पुराण' शब्द मुझे प्रमाण है, परन्तु वह किसका विशेषण है यह, पुस्तक दिखाइए, बतादूंगा !"
तब, जो पुस्तक लाकर स्वरामीजी कों दिखाने लगे वह वृहदारण्यक नहीं थी, किन्तु गृह्यसूत्र का एक ग्रन्थ था। माधवाचार्यने उस ग्रन्थ का पन्ना पकड़कर कहा, "इसमें पुराण शब्द किसका विशेषण है ?"
स्वामीजी– "पाठ तो पढ़िये"!
माघवाचार्यजी ने "ब्राह्मणानीतिहासपुराणानीति" यह पढ़कर सुनाया।
स्वामीजीः–"यहॉ "पुराण" शब्द "ब्राह्मण" शब्दका विशेषण है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्राह्मण पुरातन अर्थात् सनातन है।"!
बालशास्त्रीजीः——"क्या कोई बाह्मण नूतन भी हैं ???
स्वामोजीः——"ब्राह्मण नवीन तो नहीं हैं, परन्तु किसी को सन्देह करने का अवकाश ही न मिले इसलिए यह विशेषण रक्खा गया है।"
विशुद्धानन्दजीः –इस पाठ में ब्राह्मण और पुराण इन दो शब्दों के बीच इतिहास शब्द व्यवधानरूप पड़ा है, इसलिए "पुराण" शब्द विशेषण नहीं हो सकता।

स्वामीजीः——यह कोई भी नियम नहीं है कि व्यवधान होने पर विशेषणन हो सके। देखिए, भगवद्गीता के 'अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे' इस श्लोक में विशेषण कितना दूर पड़ा है।"

विशुद्धानन्दजीः–'इतिहासपुराणानि' इस पाठमें यदि "इतिहास" शब्द का "पुराण" शब्द विशेषण नहीं हैतो क्या इससे यहाँ नवीन इतिहास ग्रहण करोगे ?"

स्वामीजीः——"इतिहासपुराणः पंचमो वेदानां वेदः" छान्दोग्य के इस पाठ से 'पुराण' शब्द "इतिहास' शब्द का विशेषण है।

इस पर वामनाचार्य आदि अनेक पण्डित कहने लगे कि यह पाठ उपनिषद् में नहीं है। स्वामीजी ने उनको बलपूर्वक कहा, मैं लिख देता हूँ और आप भी लिख दीजिए कि यदि ऐसा पाठ उपनिषद में निकल आए तो आपकी हार समझी जाय और यदि न निकले तो आप की जय।"

यह सुनकर सबके मुख बन्द हो गए ओर कितनी ही देर तक सारे सभा–स्थल में एक सन्नाटा सा छा रहा। जब देर तक किसी ने कोई प्रश्न न किया तो विद्यावारिधि दयानन्द ने सब पण्डितों को ललकार कर कहा, "आपमें से जो व्याकरण जानते हैं वे बताये कि व्याकरण में कहीं 'कल्म' संज्ञा की गई है अथवा नहीं ?"

बालछशास्त्रीजीः——— संज्ञा तो नहीं की है, किन्तु एक स्थल में एक भाष्यकार ने उपहास अवश्य किया है।"!

स्वामीजीः—— आप अपने कथन की पुष्टि में कोई प्रमाण उपस्थित करें और बतायें कि भाष्यकार ने कहाँ उपहास किया है।"!

यह कथन सुनकर बालशास्त्री चुप हो गए और दूसरे पण्डितों की भी मौन–मुद्रा किचन्मात्र भी भंग न हुई।

कूटनीति का प्रयोग– दोपहर ३ से ७ बजे तक निरंतर चार घंटे बीत गए। पौराणिक दल के सभी महारथी मिलकर और अलग–अलग दयानंद अभिमन्यु पर प्रहार करते रहे! परंतु उनके सभी प्रमाण एवं युक्ति के अस्त्र महर्षि की युक्तियों और अकाट्य प्रमाणों के सामने कुंठित होते गए! वे न्याय युद्ध में महर्षि को अजेय समझने लगे।

इस समय सूर्य अस्त हो चुका था। अंधेरा धीरे–धीरे घना होता जा रहा था। इसी समय पंडित वामनाचार्य ने दो पुराने पन्ने जो अत्यंत अस्पष्ट लिखे हुए थे, निकालकर कहा कि यह वेद के पन्ने हैं इनमें लिखा है कि यज्ञ की समाप्ति पर दसवें दिन पुराणे का श्रवण करें! ("यज्ञ समाप्तौ सत्यां दशमें दिवसे पुराणपाठं श्रृणुयात्।') वामनाचार्य ने कहा–'यहॉ पुराण शब्द विशेषण नहीं हो सकता।"

महर्षि ने कहा–'पढ़कर सुनाइये!' विशुद्धानंद जी ने पन्ने पकड़ कर महर्षि की ओर किये और कहा –'आप ही पढ़ लीजिए'। महर्षि ने पन्ने विशुद्धानंद जी को लौटा दिए और

कहा 'आप ही पढ़ लीजिए!' विशुद्धानंद जी ने पन्ने फिर लौटाते हुए महर्षि से कहा कि 'मैं चश्मे के बिना नहीं पढ़ सकता, इसलिए आपको ही पढ़ना होगा!'

महर्षि ने पन्ने हाथ में ले लिए। दीपक के धुंधले प्रकाश में पहले वह पुस्तक का नाम देखने का यत्न करने लगे। वेद के नाम अध्याय अथवा मंत्र संख्या का वहाँ कुछ पता न था। अभी दो मिनट भी न होने पाए थे कि विशुद्धानन्द ने कहा–'हमें देर होती है' और दयानंद की पीठ पर हाथ फेर कर बोले–ओ हो! हार गए! और यह कहते ही उन्होंने ताली बजाई! दूसरे पंडितों और महाराज ने भी उनका साथ दिया।'दयानंदः पराजितः' कहते हुए सब के सब चलते बने! महर्षि ने विशुद्धानन्द का हाथ पकड़कर बैठ जाने का बहुतेरा अनुरोध किया! पर वह तो उनकी कूटनीति का एक बड़ा दॉव था। बैठकर और महर्षि को उचित समय देकर वह भला अपने दॉव की असफलता क्यों होने देते?

पचास हजार की भीड़ में हुल्लड़ मच गया! ताली और 'दयानंद हार गया' के कोलाहल के अतिरिक्त महर्षि पर ईंटों, कंकड़ों,ढेलों, गोबर और जूतों की वर्षा भी हुई। परंतु पंडित रघुनाथप्रसाद कोतवाल ने महर्षि को खिड़की के भीतर कर किवाड़ बंद कर दिए और उपद्रव कारी गुंडो को सिपाहियों ने संभाल लिया। इस राजकीय सहायता के बिना महर्षि की रक्षा निश्चय ही संदेहास्पद थी। कुछ भी हो, रघुनाथप्रसाद कोतवाल की निष्पक्षता की खूब प्रशंसा रही। महर्षि ने शास्त्रार्थ से पहले अपने प्रामण्य ग्रन्थों की सूची देने से इनकार कर दिया था। जिस पर पंडितों ने शास्त्रार्थ करना ही अस्वीकार कर दिया। तब इन्हीं रघुनाथ प्रसाद ने महर्षि से अनुरोधपूर्वक उनके प्रमाणिक ग्रथों की सूची दिलवाई। फिर पंडितों ने महर्षि को घेर कर बैठने की जो अव्यवस्था की उसकी भी उसने निंदा की और अंत में गुंडो से महाराज ने रक्षा की। अस्तु

विफल प्रयत्न– शोक है कि सारा आयोजन– जिस पर इस बार सारे भारत की ऑखें केंद्रित हो गई थी–जिस पर महर्षि को विश्वास था की मूर्ति पूजा के वेद विहित होने ना होने का विद्वान मंडली से अंतिम निर्णय हो जाएगा; इसके लिए काशी के दिग्गज पंडितों का सारा विद्या बल और काशी नरेश के कौशल व धन का भारी भाग व्यय हुआ–वह यूँ ही उच्छृंखलता में ही समाप्त हो गया! मूर्तिपूजा और पुराण के वेद प्रामाण्याप्रामाण्य वास्तविक प्रश्न वैसा ही अनुत्तरित रह गया!

पंडित ही नहीं सिद्ध भी– इस भारी गड़बड़ और हुल्लड़, अपमान और निरादर में भी महर्षि का मन एक मिनट के लिए भी विचलित नहीं हुआ! उन्हें अपने साथ हुए अन्याय के कारण दुःख तो हुआ! परंतु इससे किसी प्रकार की घबराहट, अशांति अथवा चिड़चिड़ापन का कोई लक्षण महर्षि की मुखमुद्रा पर लक्षित नहीं हुआ। वे पूर्ववत शांत थे! आपने पंडित जवाहरलाल से इतना अवश्य कहा–"बड़ी आशा थी कि इतने विद्वानों के एकत्र होने पर शास्त्रार्थ न्याय पूर्वक होगा! शास्त्रार्थ तो कई दिन होने को था! एक दिन के लिए होने की बात नहीं थी! पंडितों ने यह बहुत ही अन्याय किया है!"

काशीवासी संत ईश्वरसिंह ने आनंदोद्यान से आते क्षुब्ध जन समुदाय में विद्यार्थियों, पंडितों और साधारण जनों से महर्षि के संबंध में प्रयुक्त अपशब्द सुने थे। उनका विचार हुआ कि देखें–दयानंद के मुखमुद्रा और चित्त की अवस्था इस व्यवहार के पश्चात कैसी है? वे तत्काल महाराज के आश्रम को गए! पहुँचने पर उन्होंने देखा– महाराज चांदनी में टहल रहे थे। ईश्वर सिंह जी का उन्होंने सदा की भाँति मुस्कुराते हुए स्वागत किया। आत्मा–परमात्मा संबंधी वार्तालाप होता रहा!ईश्वरसिंह जी –को महाराज के मुखमंडलपर विषाद की थोड़ी भी कालिमा नहीं दिख पड़ी! लोगों के अन्याय का भी नाम उस समय उन्होंने नहीं लिया! तब उन्होंने महाराज के प्रति अगाध श्रद्धानंद को कहा–"महाराज! आज तक मैं आपको वेद का महान पंडित मात्र समझता था! आज आपके हृदय को राग–द्वेष से मुक्त अनुभव कर मुझे पूर्ण विश्वास हुआ कि आप वीतराग महात्मा और सिद्ध पुरुष हैं।"

शास्त्रार्थ केपश्चात्– इस दिन के पश्चात् एक मास तक महर्षि काशी में ही विद्यमान रहे! वे स्थल छोड़कर भागने वालों में से नहीं थे! धर्म के ठेकेदार पंडितों ने व्यवस्थाएँ प्रकाशित की थी कि दयानंद के पास जाने वाला पापी और पतित होगा! उसकी जाति बहिष्कार किया जाएगा! इससे उनके समीप आने वालों की संख्या अवश्य कम हुई। परंतु फिर भी वह संख्या पर्याप्त रही! महर्षि का प्रताप और प्रभाव बढ़ता गया! महर्षि पंडितों को फिर भी शास्त्रार्थ के लिए ललकारते रहे! परंतु पंडित अब वह गलती क्यों दोहराते? दोबारा शास्त्रार्थ नहीं हुआ! "दशमेहनि किंचित्पुराणमाचक्षीत"इस जिस संदिग्ध वाक्य को दयानंद भीष्म का शिखंडी बनाया गया था, महाराज ने अगले ही दिन एक मुद्रित विज्ञापन द्वारा उसकी पोल जनता के सम्मुख रख दी! काशी शास्त्रार्थ नाम से पुस्तकाकार में सारा विवरण टिप्पणी सहित छाप कर बाँटा गया। परंतुकाशी के पंडितों में महर्षि के सम्मुख फिर से खड़ा होने का साहस ही नहीं था।

समाचार पत्रों की सम्मतियाँ–इस शास्त्रार्थ के परिणाम तथा अन्य वर्णन के संबंध में तत्कालीन कुछ पत्रों की सम्मतियाँ इस प्रकार हैः –

क्रिश्चियनइंटेलिजेंसर (मार्च १८७०) में शास्त्रार्थ में उपस्थित किसी प्रसिद्ध व्यक्ति ए.एफ. आर.एच. के वर्णन का कुछ भाग इस प्रकार है–'जब मैं नवंबर मास में काशी लौट कर आया तो मेरा उनसे साक्षात्कार हुआ! भरतपुर के महाराज के साथ मैं उनसे मिलने गया! ...यह सुनकर विशुद्धानन्द प्रभृत्ति पंडित गण बोलेकि समस्त वेद उन सब के ही कंठस्थ है। तब दयानंद ने कई प्रश्न किये, किंतु वे दयानंद के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सके।.... दयानंद ने उस उल्लिखित अंश को ध्यान से देखने के अभिप्राय से दोनों पत्रों पर दो मिनट भी दृष्टिपात नहीं किया था कि इतने में पंडित गणचले गए।

हिंदू पेट्रियट (१७ जनवरी १८७०)–सभा में दयानंद के साथ पंडितों का बहुत देर तक वाक्ययुद्ध रहा। शास्त्र के संबंध में पंडितों की तीक्ष्णदृष्टि होने पर भी वे लोग निस्संदेह दयानंद से पराजित हो गए थे। अर्थात् उन्हें न्यायानुसार पराजित करना असंभव समझकर

पंडितों ने अन्याय युक्त विचार का आश्रय ग्रहण कर लिया था!....हमने देखा दयानंद की मूर्ति ऋषि के समान है, उनका मुख सर्वदा प्रफुल्लित और प्रति अत्यंत सरल है ! ...उन्होंने वेद प्रतिपादित विशुद्ध ब्रह्मवाद को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से एक वेद विद्यालय की स्थापना करने का भी संकल्प किया है।

रुहेलखंड समाचार पत्र (कार्तिक संवत१६२६): स्वामी दयानंद जी मूर्तिपूजा के विरुद्ध है। उनका शास्त्रार्थ कानपुर के पंडितों से भी हुआ था और अब उन्होंने काशी के पंडितों को भी जीत लिया है।

ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका लाहौर (चैत्रसंवत१६२६) इसमें संदेह नहीं है कि पंडित लोग मूर्तिपूजा की आज्ञा वेदों में नहीं दिखा सके!

(तत्वबोधिनी पत्रिका ज्येश्ठ संवत १७६४ बंगाली संवत)—वेद से प्रतिमा पूजन व्यवस्था देकर कोई पंडित स्वामी दयानंद जी को नहीं हरा सका! इसलिए स्वामी जी को बड़ा वेदवेत्ता समझना चाहिए!.........इस विषय में काशी नरेश की पंडित सभा तथा अन्य देशों के विद्वान भी उपस्थित थे, परंतु किसी ने भी वेदों से प्रतिमा पूजन ना दिखाया!

प्रत्नकम्रनंदिनी (दिसंबर १८६६)—इस पत्रिका के संपादक पंडित सत्यव्रतसामाश्रमी शास्त्रार्थ में उपस्थित थे। उन्होंने इस शास्त्रार्थ का विवरण अपनी पत्रिका के उक्त अंक में प्रकाशित किया था! वह वर्णन ऊपर लिखे वर्णन से मिलता है।

पायनियर (२० नवंबर १८६६) मेंए.के.एम. नाम से लिखे लेख में लिखा है— धर्म के विषय में शीघ्रता से परिणाम निकालने से उसकी बातों की सत्यता व असत्यता सिद्ध नहीं होती! हमें यह आशा कभी न थी कि महाराज और लगभग सभी प्रतिष्ठित नागरिकों की उपस्थिति में विषय का निर्णय ऐसी उतावली और ऐसे असभ्य व्यवहार से पंडितों के अनुकूल जबरदस्ती कर लिया जाएगा! विषय का नियम और क्रमबद्धता से अंतिम निर्णय करने के लिए दूसरी सभा होनी चाहिए!

राज पंडित द्वारा ऋषि का समर्थन—यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि राजपंडित तारानाथ तर्करत्न ने एक प्रतिष्ठित बंगाली सज्जन बाबू चंद्रशेखर से निज में स्पष्ट कह दिया था कि मैं भली भांति जानता हूँ कि यह पौराणिक प्रपंच ठीक नहीं है! दयानंद जो कहते हैं, सो ठीक है। परंतु राजा की प्रसन्नता के लिए यही कहना पड़ता है कि मैं दयानंद को शास्त्रार्थ में हरा दूंगा!

आगे चलकर हम देखेंगे कि मंगलवार ८ अप्रैल सन १८७३ को हुगली में बड़े असमंजस के पश्चात इन्हीं राजपंडित ने स्वामी जी से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ किया। शास्त्रार्थ के पश्चात! अपनी मूर्तिपूजा को मिथ्या स्वीकार किया! अपनी व्यवस्था भी आजीविकावश प्रकट की!

स्वामी कैलाश पर्वत—काशी के पंडितों ने दयानंद का मूर्खता से मुकाबला किया! इससे उनका अपयश और दयानंद का यश बढ़ेगा!

बालशास्त्री–गोस्वामी घनश्याम दास मुल्तान निवासी ने बालशास्त्री से इस संबंध में पूछा तो उत्तर मिला–'हम गृहस्थ हैं और वह यति सन्यासी हमारे पूज्य! उनका हमारा शास्त्रार्थ कहाँ बन सकता है?'

शास्त्रार्थ ठीक नहीं हुआ–हरे कृष्ण व्यास, जय नारायण तर्कपंचानन, शिवकृष्ण वेदांत सरस्वती आदि ने कहा–शास्त्रार्थ ठीक नहीं हुआ! परंतु.......दयानंद हार गया! ?

नरेश का पश्चाताप–काशी नरेश इस समय तो कुटिल चाल चल गए! परंतु कई वर्ष पश्चात जब महर्षि फिर काशी में पधारे तो बड़े आग्रह से उन्हें राजगृह में बुलाया! उन्होंने विनय से महर्षि दयार्द्र हो उठे और पधारे! काशी नरेश ने बड़े सम्मान से स्वागत किया! उन्हें स्वर्ण सिंहासन पर बिठाया! आप रजत सिंहासन पर बैठे! अपने हाथों महर्षि के गले में फूलों की माला डाली! चरण वंदना की और विनीत भावसे कहा–"मैं बहुत दिनों से मूर्तिपूजा करता चला आता हूँ। उसके प्रति मेरा अनुराग और श्रद्धा है! इसलिए आपके इसका प्रतिवाद करने पर मुझे बहुत कष्ट हुआ! शास्त्रार्थ के समय यदि आप मेरे किसी अचार से क्षुब्ध हुए हों तो मुझे क्षमा करें! महर्षि ने नरेश को क्षमादान किया!

स्वामी जी के हितचिंतक पंडित जवाहरदास ने इस संबंध में स्वामी जी को सम्मति दी थी कि वह नरेश के निमंत्रण पर राज प्रसाद में ना जावे! महर्षि एक बार रुके भी! परंतु अत्यंत आग्रह पर फिर चले ही गए! पंडित जवाहरलाल जी का विचार था कि महर्षि न जाते तो नरेश स्वयं उनके पास आते!

रामस्वामी का घमंड–शास्त्रार्थ के अतिरिक्त कुछ अन्य घटनाएँ भी यहाँ हुई। रामस्वामी एक गर्विले पंडित थे। वे स्वामी जी का मुँह भी नहीं देखना चाहते थे और उनके सम्मुख देववाणी संस्कृत में बात करने को पाप कहते थे। इन्होंने हारने वाले की नाक काट लेने के लिए छुरी रखना शास्त्रार्थ की शर्त उपस्थिति की। स्वामीजी ने कहा एक नहीं दो रखो, दूसरी जीभ काटने के लिए! परंतु शीघ्र ही इसका घमंड दूर हो गया! निरुत्तर हो चलता बना!

गंगा में डूबोने का यत्न–महर्षि ने काशी में मुसलमानी मत का भी खंडन किया। इससे मुसलमान चिढ़ गए! एक दिन वे गंगा तट पर अकेले थे। मुसलमानों की एक टोली उधर से निकली! उसमें से दो व्यक्तियों ने महाराज की बंगलो में हाथ देकर उन्हें अधर उठा लिया और गंगा में फेंकना चाहा! महर्षि उनका दृढ़ संकल्प ताड़ गए! उन्होंने दोनों को अपनी भुजाओं में कसकर गंगा में छलांग मारी और फिर स्वयं डुबकी लगा दूसरे पार जा निकले! वे दोनों वही डुबकी खाते छोड़ दिए!

पान और भोजन में–विषः एक मनुष्य भोजन लेकर आया! महाराज ने कहा मैं भोजन कर चुका हूँ। इस पर उसने पान लेने का आग्रह किया। महाराज ने पान ले लिया! पीछे खोल कर देखा तो उसमें विष था! वह मनुष्य इतनी देर में भाग गया!

शारदीय नवसस्येष्टि और महर्षि निर्वाण दिवस मनाया

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर में कार्तिक अमावस्या सम्वत् २०८० रविवार दिनांक १२ नवम्बर २०२३ दीपावली को महर्षि की अंतिम कर्मस्थली में अपराह्न ३ बजे से सायं ६ बजे तक शारदीय नवसस्येष्टि और महर्षि निर्वाण दिवस मनाया गया। आरंभ में माता शान्तिदेवीजी, श्री रामस्वरूपजी आर्य एवं श्री दुर्गादासजी आर्य ने ईशभक्ति के भजन और ऋषि महिमा के प्रेरक गीत प्रस्तुत किए। आचार्यश्री वरुणदेवजी और आचार्यश्रीआर्यनरेशजी के सांनिध्य में आयुष्मान् संजय आर्य नेविशेष शारदीय नवसस्येष्टियज्ञ भी संपन्न कराया और इस अवसर पर मुख्य यजमान कमलकिशोर आर्य के जन्मदिवस पर विशेष आहुतियॉ भी दिलवायीं। प्रसिद्ध भजनोपदेशक कमल आर्य ने यज्ञप्रार्थना सम्पन्न करवाई और महर्षि महिमा का गीत 'आज की दिवाली संदेश सुनाए रे, वीरों के दिल में वीरता जगाए रे' सुनाया।

इस अवसर पर अपनं संबोधन में आचार्यश्री वरुणदेवजी ने इस पर्व और अवसर का

परिचय कराते हुए कहा हम न्यास में बैठे लोगों के सम्मुख महर्षि का चरित्र रहना चाहिए। महर्षि सहित महापुरुषों के कृतित्व और चरित्र को स्मरण करने का कारण उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं से हमें मार्गदर्शन मिलता है। किन्तु महर्षि के विचारों में भी हमारा सबसे बड़ा मार्गदर्शन परम पिता परमात्मा ने वेदों के द्वारा किया है। कल्याण मार्ग के पथिक से पं० लेखरामजी आर्यमुसाफिर और मुनिवर गुरुदत्तजी द्वारा प्रतिनिधि सभा के कार्यक्रम में एक वेदमंत्र बोलकर महर्षि के जीवन में चरितार्थ होना प्रभावी रूप से बताने का वर्णन किया।आचार्यजी ने वेदमंत्र 'वेदाहमेतम् पुरुषम् महान्तम्' की सुन्दर व्याख्या करते बताया कि यह वेदमंत्र महर्षि के जीवन में चरितार्थ हुआ।

आचार्यश्री आर्यनरेशजी ने महर्षि के पुनर्जन्म की उत्कट कामना करने वाले भावुक आर्यों से कहा कि एक बार सोच लो कि महर्षि यदि पुनः हमारे बीच आ जाय तो क्या हम उनके सामने उपस्थित होने की योग्यता रखते हैं? क्या हम अपने घर में यज्ञ करते हैं? यज्ञ करने के बाद ही भोजन ग्रहण करते हैं? क्या गोपालन करते हैं? क्या हमारा पहनावा, रहन सहन, आचार व्यवहार महर्षि द्वारा दी गई आज्ञा के अनुरूप है? तात्पर्य यह कि महर्षि की बताई कसौटी के अनुसार आर्य बनने को कमर कस लेवें। अन्यथा हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे।

आचार्यश्री ने कहा कि बिना परिवर्तन लाए प्रवचन बेकार है, बिना संस्कारी संतान के गृहस्थ बेकार है, बिना आंदोलन के सभा बेकार है बिना राष्ट्ररक्षा के सरकार बेकार है और बिना गुरु के पीछे चले शिष्यत्व बेकार है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम सच्चे गुरु देव

दयानन्द के शिष्य हैं, हमें निस्संकोच और निर्भय होकर उनका अनुकरण करना चाहिए। महर्षि के बलिदान के कारणों और षड्यंत्रकारियों के बारे में बताते हुए उन्होनें कहा कि शर्म की बात है कि ऐसे लोगों को आज भी राजनैतिक पार्टियाँ प्रश्रय देती हैं, और उनको फलने फूलने में पूर्ण सहयोग देते हैं।

पं0 लेखरामजी आर्यमुसाफिर के जीवन की अमृतसर की घटना बताते उन्होनें कहा कि एक व्यक्ति कार्यक्रम के इश्तिहार लगा रहा था और पूछनेवालों को कार्यक्रम में आने का निमंत्रण भी दे रहा था। जब कार्यक्रम देखने लोग गए तो देखते हैं कि मंच पर वक्ता इश्तिहार लगाने वाला व्यक्ति ही है। बेटे की जान को नहीं, दयानन्द के काम को देखा। ऐसे निरभिमानी व समर्पित भाव से आर्यसमाज का प्रचार होता है। आचार्यश्री ने मुनिवर गुरुदत्त के अस्तिक बनने की घटना भी बताई।

आचार्यजी ने लिव–इन–रिलेशनशिप, भारतीय दण्ड संहिता से विवाहित पुरुषों द्वारा विवाहिता से व्यभिचार को दण्डनीय अपराध घोषित करने वाली धारा 497 को हटाना

देश के लिए बहुत घातक है। उन्होनें कहा कि दयानन्द के सिपाही हो तो खण्डन मण्डन से मत डरो, संविधान का अनुच्छेद 51 आपके साथ है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण धारण कर जॉच और सुधार का संदेश देता है। हम सब अपने देव दयानन्द द्वारा खींची गई लकीर को और लंबा करें, उनकी परंपरा को आगे बढ़ाएँ। इसी में हम सबका कल्याण है।

https://www.facebook.com/profile.php?id=100072511653188 पर पूरा कार्यक्रम देख सकते हैं। न्यास के मंत्रीजी ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया। ब्रह्मयज्ञ और जयकारों के पश्चात् सभी आगंतुकों ने ऋषिलंगर में भोजन किया।

स्वामी श्रद्धानन्दजी का अलीगढ़ में निधन

आर्यजगत् के वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी, दयानंद के सिद्धांतो को अंगीकार करने वाले तपस्वी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में विराजने वाले १०४ वर्षीय स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज का कार्तिक अमावस्या सम्वत् २०८० रविवार दिनांक १६ नवम्बर २०२३ को प्रातः ५:३० बजे अलीगढ़ में देहावसान होगया। अंतिम संस्कार उसी दिन दोपहर ३ बजे अलीगढ़ में किया गया। २२ नवम्बर २०२३ को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा न्यास परिसर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। पहले शांति यज्ञ किया जिसकी ब्रह्मा वैदिक विद्वान धारणा जी थीं। पश्चात् सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा ने श्रंद्धांजलि दी गई । श्रद्धांजति देने वालों में सूरसागर आर्यसमाज से श्री नरपतसिंह भाभा, आर्यसमाज जालोरियॉ के बास से श्री श्यामजी आर्य, आर्यसाज पाणिनिनगर से श्री वीरेंद्र जी जांगिड़, शास्त्री नगर आर्यसमाज से श्री जुगरात बालौत, स्मृति भवन के मंत्री श्री आर्य

किशनललजी गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत, श्री रामस्वरूपजी, आदि ने अपने विचार रखे । शांतिपाठ के पश्चात् एक अमरूद का पौधा श्री जयसिंहजी, श्री किशनलालजी, विक्रम सिंहजी , श्री प्रेम शास्त्री आदि ने लगाया तथा स्वामीजी के शिष्य/सेवक प्रदीप आर्य को इस अमरूद के पौधे ठीक तरह से देखरेख का दायित्व सौंपा गया।

शारदीय नवसस्येष्टि
आचार्यश्री वरुणदेवजी
भजनोपदेशक कमलजी
आचार्यश्री
आर्यनरेशजी
माता
शान्तिदेवीजी
रामस्वरूपजी आर्य
दुर्गादासजी आर्य
माताएँ
बहनें

Postal Reg. Jodhpur/434/2021-2023

Date of Posting 9,10-12-2023
Date of Print 7-12-2023

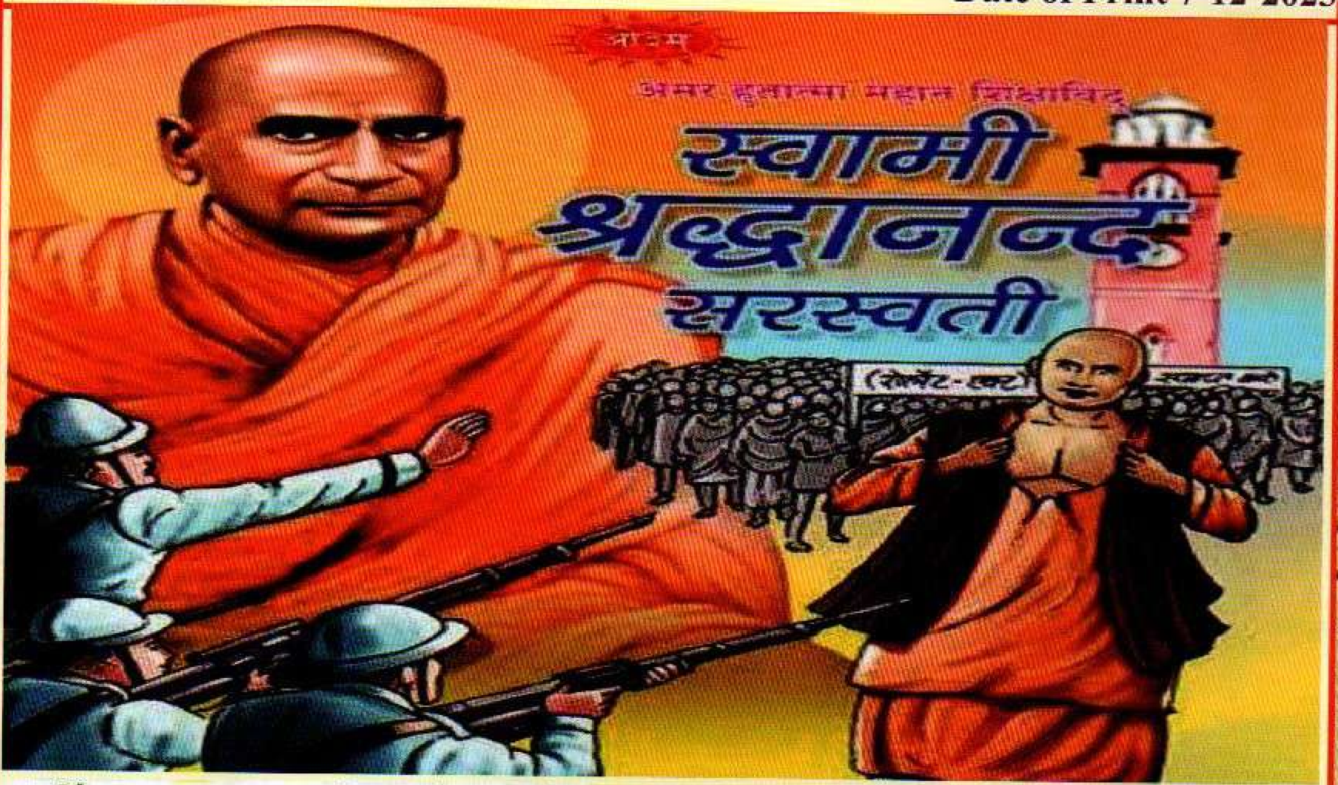

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से पतन के प्रेयमार्ग से कल्याण मार्ग के पथिक बने, गुरुकुल पद्धति और कन्या शिक्षा के पुनरुद्धारकर्ता, दलितों के मसीहा, शुद्धि आन्दोलन के अतिरथी, भारत में लोक अदालतों के विचारदाता, कांग्रेस के इतिहास में देशभक्ति के स्वर्णिम पृष्ठों के लेखक, जलियाँवाला हत्याकाण्ड के बाद अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन के निर्भय आयोजक, चांदनी चौक में अंग्रेजी संगीनों के सामने छाती खोलकर अड़ जाने वाले स्वातन्त्र्य संग्राम नेता, भारतीय स्वामित्व के प्रथम अखबार के प्रकाशक और निर्भीक सम्पादक, जामा मस्जिद के मिम्बर और स्वर्ण मन्दिर के अकाल तख्त से प्रवचनकर्ता, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक, सर्वस्वदानी, महर्षि दयानन्द के सच्चे उत्तराधिकारी स्वामी श्रद्धानन्द जी का २३ दिसम्बर को बलिदान दिवस अवश्य मनाएँ, प्रेरणा पाएँ, प्रेरित करें। **महर्षि के मिशन की क्रियान्विति में शंका होने पर ... जीवनी पढ़ें!!!**

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर 0291-2516655 के लिए प्रकाशक व मुद्रक विजयसिंह भाटी द्वारा महर्षि दयानन्द मार्ग, मोहनपुरा पुलिया के पास जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं सैनिक प्रिण्टर्स, मकराणा मौहल्ला केरू की पोल जोधपुर फोन नं. 9829392411 से मुद्रित,

सम्पादक फोन नं. 9460649055

Book-Post